नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 316, नई दिल्ली, गुरुवार 15 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 डिप्रेशन कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक इलाज योग्य बीमारी है

06 "प्रोसेस्ड भोजन : सुविधाजनक ज़हर और भारत की मौन स्वास्थ्य आपातकाल

08 झारखंड का चर्चित बच्चा लापाता कांड में रामगढ से बच्चे हुए बरामद, डीजीपी ने की प्रेसवार्ता

दिल्ली परिवहन विभाग ने फिर खोला असुरक्षित वाहनों का पिटारा: स्लीपर कोच बसों का पंजीकरण, जनता की जान जोखिम में!

संजय कुमार बाठला

दिल्ली परिवहन विभाग मुख्यालय की व्यवसायिक पंजीकरण शाखा (DTO मुख्यालय व्यवसायिक वाहन पंजीकरण) ने एक बार फिर जनता की सुरक्षा को ताक पर रखते हुए नियमों का उल्लंघन किया है।

हमारे पिछले कई लेखों में सबूतों के साथ हमने बताया था कि विभाग के कुछ अधिकारी सड़क सुरक्षा की बजाय अपने जानकारों, परिजनों और व्यवसायिक मित्रों को फायदा पहुंचाने में लगे हैं।

इसकी ताजा मिसाल DTO मुकेश बुद्धिराजा हैं।

DTO मुकेश बुद्धिराजा: नियमों के जानकार, फिर भी उल्लंघन के मास्टरमाइंड

पूर्ण विशेषज्ञता: मोटर वाहन अधिनियम (MV Act) और नियमों (CMVR) के माहिर।

राजनीतिक संरक्षण: वर्तमान दिल्ली सरकार और भाजपा का खुला समर्थन।

माफिया का चहेता: ऑटो माफिया में उनकी प्रशंसा।

विभागीय बैकिंग: आला अधिकारियों का पूर्ण सहयोग।

ऐसे अधिकारी से चूक की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर उनके कार्यकाल में सड़कें असुरक्षित हो रही हैं, तो साफ है कि यह जानबूझकर नियम तोड़ने का खेल है।

परिवहन आयुक्त ने सर्वोच्च न्यायालय के दिशानिर्देशों (जैसे M.C. Mehta मामले), सर्विस रूल्स और अन्य कानूनों को दरकिनार कर गैर-तकनीकी अधिकारियों को तकनीकी पदों पर बिठाया है। इस तकनीकी अधिकारी ने यह सिद्ध कर दिखाया की तकनीकी अधिकारी भी आज की तारीख़ में वहीं गलतियां करेगा जो तकनीकी पद पर बैठकर गैर तकनीकी करेगा। इस गलती के आधार पर आयुक्त द्वारा जो गलत किया जा रहा है वो गलत नहीं।

गलती चाहे गैर-तकनीकी करे या तकनीकी—परिणाम जनता भुगत रही है।

पुराना उल्लंघन: बिना परमिट वाहनों का पंजीकरण मोटर वाहन नियमों के तहत बिना परमिट के वाहनों को पंजीकृत करने का सिलसिला जारी है:भारत सरकार की जांच एजेंसियों का सर्टिफिकेट उपलब्ध न होने पर भी पंजीकरण।

*परिवहन विभाग की ऑपरेशन शाखा के सर्टिफिकेट की अनदेखी।

बचाव: "सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के दिशानिर्देशों के अनुसार जांच जरूरी नहीं।

"शिकायतों पर प्रवर्तन शाखा से जांच न कराना—जनता की सुरक्षा से खिलवाड़ का सबूत।

नया खतरा: स्लीपर कोच बसों का अवैध पंजीकरण दिल्ली में वर्षों से डबल डेकर और स्लीपर कोच बसों का पंजीकरण बंद है। फिर भी DTO बुद्धिराजा ने मंत्रालय के दिशानिर्देशों का हवाला देकर इन्हें पंजीकृत कर दिया—बिना किसी आला अधिकारी की अनुमति।

खतरनाक हादसे: हाल के महीनों में इन्हीं बसों ने कई मासूमों की जान ली।

सोचा-समझा खेल: वाहन फोटो और पंजीकरण दस्तावेज देखकर आम आदमी भी समझ सकता है कि यह 'भूल' नहीं, सुनियोजित है।

पूर्ण संरक्षण: ऐसा कारनामा तभी संभव जब घर-परिवार सुरक्षित हो और ऊपर से 'गारंटी'।

यह पंजीकरण मोटर वाहन अधिनियम की धारा 52-56 और CMVR नियम 15, 93 के स्पष्ट उल्लंघन हैं। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों (स्लीपर कोच पर प्रतिबंध) की अनदेखी से सड़कें 'डेथ ट्रैप' बन रही हैं।

विभाग से तत्काल स्पष्टीकरण और कार्रवाई की मांग!

जनहित में सवाल: कब तक अधिकारी माफिया बनकर जनता की जान लीलते रहेंगे? परिवहन आयुक्त कब जागेंगे?

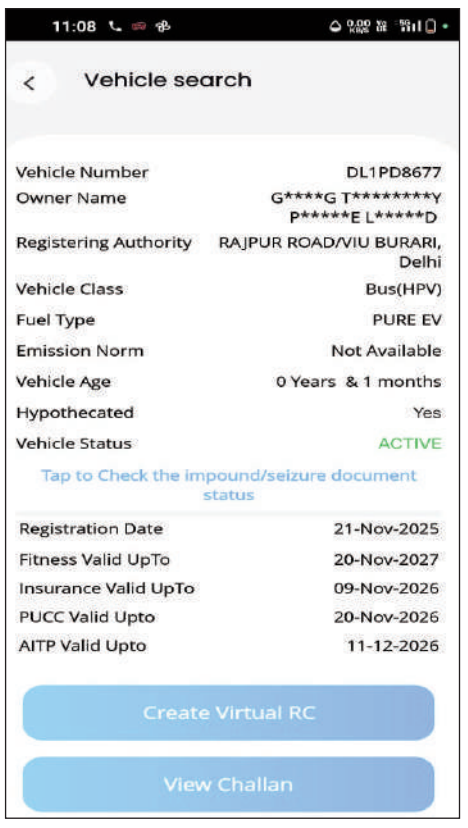

TRANSPORT DEPARTMENT, GNCT OF DELHI

[RAJPUR ROAD/VIU BURARI]

DISCLAIMER

REGISTRATION NO : DL1PD8677

Printed Date: 14-01-2026 15:01:00

Application No:	DL25112164537714		
Owner Name:	GOZING TECHNOLOGY PRIVATE LIMITED		
Son/wife/daughter of:	NA		
Ownership Type:	FIRM	Date of Registration:	21-Nov-2025
Purchase Date:	11-Nov-2025	Chassis No:	ME9HB1CR2J2105030
Engine No:	M224120184	Passport No:	
Pan No:		Aadhaar No:	
Voter Id:			
Full Address (Permanent):	H.IN.KH NO.293 S/F WESTERN MARG,, NEAR KHER SINGH ESTATE,SAIDULAJAB,, , NEW DELHI, DELHI-110030		
Full Address (Temporary):	H.IN.KH NO.293 S/F WESTERN MARG,, NEAR KHER SINGH ESTATE,SAIDULAJAB,, , NEW DELHI-DELHI-110030		
Dealer's Name and Address:	NAARNI TECHNOLOGY SOLUTIONS PVT LTD, 25-168/1,NH 16 SERVICE ROAD, NAMBUR, GUNTUR, , , 548 522508		
Maker's Name:	AZAD INDIA MOBILITY LTD		
Maker's Classification:	A12.5C		
Sale Amount:	Rs. 16200000/-	Registration Type:	TEMPORARY REGISTERED VEHICLE
Norms:	Not Available	Month/Year of Manuf:	9/2025
Seating Cap(inc. driver):	26	Standing Cap:	0
Horse Power(BHP):	322.94	Cubic Capacity:	0.00
No of Cylinders:	0	Wheel base:	6700
Class of Vehicle:	BUS	Type of Body:	BUS
Fuel used in engine:	PURE EV	Colour:	NIGHT BLUE
Unladen Weight(in kgs):	14170	GVW(in kgs):	18000
AC Fitted:	YES	Audio Fitted:	N
Video Fitted:	N	Length (in mm):	12645
Width (in mm):	2580	Height (in mm):	3995
Owner Serial No:	1		

Hypothecation Details: (Hypothecation) CATALYST TRUSTEESHIP LIMITED, NA, , , New Delhi, Delhi, 110001

Insurance Details: THIRD PARTY Insurance From The New India Assurance Company Limited vide policy certificate/covernote no 320300312503000045 27 is valid from 10-Nov-2025 to 09-Nov-2026.

Date:

Signature of Acceptor After Particulars Verification

Note: The Registration is subject to Registering Authority Approval. In case of disapproval, Vehicle Registration Mark will not be valid.

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

जनजागरूकता और आपके स्वास्थ्य के प्रति परिवहन विशेष द्वारा विशेष

आपका स्वास्थ्य ठीक रहे यह आप पर और आपकी भोजन की थाली पर निर्भर करता है ना की बनावटी दिखावे पर

प्रोसेस्ड फूड, दीर्घकालिक बीमारियाँ और उभरती वैश्विक स्वास्थ्य आपातस्थिति

संजय कुमार बाठला

प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ आज दुनिया भर में दीर्घकालिक (क्रॉनिक) बीमारियों के सबसे बड़े कारण बन चुके हैं।

इसी खतरे को देखते हुए अमेरिका जैसे देशों को अपनी राष्ट्रीय आहार नीतियाँ बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

इससे भी अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि भारत उसी राह पर कहीं अधिक तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और हमारे बार बार इस मुद्दे पर सबूतों और तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत लेखों के बाद भी प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों की बिक्री में कटौती की जगह वृद्धि देखने को मिल रही हैं,

आपका स्वास्थ्य ठीक रहे यह आप पर और आपकी भोजन की थाली पर निर्भर करता है ना की बनावटी दिखावे पर

अमेरिका में खतरे की घंटी क्यों बज चुकी है रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में स्वास्थ्य - सेवा पर होने वाले कुल खर्च का लगभग 90% हिस्सा क्रॉनिक बीमारियों पर खर्च हो रहा है — जैसे मोटापा, मधुमेह (डायबिटीज़), हृदय रोग और मेटाबॉलिक विकार।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इन सभी बीमारियों का एक साझा मूल कारण पहचाना है—

1. प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन का अत्यधिक सेवन।

*** ऐसे खाद्य पदार्थ आमतौर पर:**

1. अत्यधिक रिफाइंड शुगर से भरपूर होते हैं
2. अस्वस्थ वसा (ट्रांस फैट) से लदे होते हैं
3. नमक (सोडियम) की मात्रा बहुत अधिक होती है
4. फाइबर, सूक्ष्म पोषक तत्व और प्राकृतिक प्रोटीन की भारी कमी होती है
5. रासायनिक एडिटिव्स, प्रिज़र्वेटिव्स और फ्लेवर एन्हांसर से युक्त होते हैं

स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, अमेरिकी सरकार ने नई डाइट गाइडलाइंस जारी की हैं, जिनमें नागरिकों से अपील की गई है कि वे:

1. प्रोसेस्ड भोजन से दूरी बनाएँ
2. प्राकृतिक, ताज़ा और न्यूनतम रूप से प्रोसेस्ड भोजन अपनाएँ
3. प्रोटीन, सब्ज़ियाँ, फल, साबुत अनाज और डेयरी उत्पाद बढ़ाएँ

यह कोई साधारण लाइफस्टाइल सलाह नहीं, बल्कि एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात प्रतिक्रिया है।

नीतिगत बदलाव के पीछे चौंकाने वाले आँकड़े रिपोर्ट में दिए गए आँकड़े अत्यंत भयावह हैं:

1. 75% अमेरिकी वयस्क मोटापे या अधिक वजन से ग्रस्त हैं
2. 50% से अधिक वयस्क डायबिटीज़ या प्री-डायबिटीज़ की अवस्था में हैं
3. 33% किशोर पहले से ही प्री-डायबिटिक हैं
4. खानपान से जुड़ी बीमारियाँ युवाओं को सेना और आवश्यक सेवाओं के लिए अयोग्य बना रही हैं

ये आँकड़े दर्शाते हैं कि हमारी थाली में रखा भोजन चुपचाप राष्ट्र के स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा को आकार दे रहा है।

भारत भी उसी खतरनाक राह पर — लेकिन कहीं अधिक तेज़ी से रिपोर्ट स्पष्ट चेतावनी देती है कि भारत अमेरिका की गलतियों को दोहरा रहा है, वह भी कई गुना तेज़ गति से।

भारत की वर्तमान स्थिति:

1. 29% भारतीय अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त
2. 11% आबादी डायबिटीज़ से पीड़ित
3. 15% लोग प्री-डायबिटिक अवस्था में
4. 3.4% बच्चे मोटापे का शिकार

*** भारत में**

1. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन की खपत 13% प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है
2. पैकेज्ड फूड पर प्रति व्यक्ति खर्च पिछले दशक में लगभग दोगुना हो गया है
3. इंस्टेंट नूडल्स, चिप्स, बिस्कुट, मीठे पेय, फास्ट फूड और बेकरी उत्पाद धीरे-धीरे घर के पारंपरिक, ताज़े भोजन की जगह ले रहे हैं।

नवीन वैज्ञानिक समझ: प्रोसेस्ड फूड शरीर को कैसे नुकसान पहुँचाता है, आधुनिक शोध बताते हैं कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन:

1. आंतों के माइक्रोबायोम को बिगाड़ता है, जिससे दीर्घकालिक सूजन पैदा होती है
2. इंसुलिन रेज़िस्टेंस को जन्म देता है, शुगर बढ़ने से पहले ही विसरल फैट (पेट की खतरनाक चर्बी) बढ़ाता है
3. भूख और मेटाबॉलिज़्म को नियंत्रित करने वाले हार्मोन्स को असंतुलित करता है
4. कैलोरी की परवाह किए बिना हृदय रोग का खतरा बढ़ाता है

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि नियमित व्यायाम करने वाले लोग भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं होते, यदि उनका आहार प्रोसेस्ड भोजन पर आधारित हो।

वैश्विक पोषण सोच में बदलाव: "रियल फूड फर्स्ट" नवीन प्रमाणों के आधार पर अब वैश्विक आहार नीतियाँ इस पर ज़ोर दे रही हैं:

1. पर्याप्त प्रोटीन – अंडे, दूध, दालें, मछली, मांस, नट्स और बीज

2. पैकेज्ड के बजाय संपूर्ण भोजन – जो अपने प्राकृतिक रूप के करीब हो

3. कम शक्कर, कम रिफाइंड आटा – मीठे पेय और रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट से बचाव

4. प्राकृतिक वसा, सीमित मात्रा में – इंडस्ट्रियल ट्रांस फैट की जगह

5. स्पष्ट फूड लेबलिंग – पैकेट पर शक्कर, नमक और फैट की चेतावनी

कई देश अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड पर टैक्स और बच्चों को लक्षित विज्ञापनों पर रोक पर भी विचार कर रहे हैं।

यह मुद्दा आज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण क्योंकि रिपोर्ट का संदेश साफ़ है: आज की क्रॉनिक बीमारियाँ उम्र की नहीं, आधुनिक खाद्य व्यवस्था की देन हैं।

यदि वर्तमान रुझान जारी रहे:

1. स्वास्थ्य-व्यवस्थाएँ आर्थिक रूप से अस्थिर हो जाएँगी
2. युवा पीढ़ी समय से पहले "मेटाबॉलिक रूप से बूढ़ी" हो जाएगी
3. जीवन की गुणवत्ता और उत्पादकता गंभीर रूप से गिर जाएगी

निष्कर्ष अमेरिका की बदली हुई आहार नीति और भारत के लिए दी गई चेतावनी एक वैश्विक चेतना का संकेत है:

1. प्रोसेस्ड फूड केवल सुविधा नहीं, बल्कि धीमा ज़हर है
2. भोजन आज राष्ट्रीय स्वास्थ्य का सबसे शक्तिशाली निर्धारक बन चुका है
3. सही पोषण द्वारा रोकथाम, बीमारी के बाद इलाज से कहीं अधिक प्रभावी है

स्वास्थ्य का भविष्य सिर्फ अस्पतालों में नहीं, बल्कि हमारी थाली में तय हो रहा है — जहाँ हमें ऐसा भोजन चुनना है जो शरीर को पोषित करे, न कि चुपचाप उसे खोखला बनाए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : भारत में मनोवैज्ञानिक साइबर फ्रॉड: डिजिटल अरेस्ट स्कैम से लेकर ट्रेडिंग ट्रैप्स तक, साइबरक्राइम के माइंड गेम्स"

भारत में साइबर अपराध का बड़ा हिस्सा उन धोखाधड़ी तकनीकों से जुड़ा है जो पीड़ितों के मनोविज्ञान को निशाना बनाती हैं। यह प्रवृत्ति शैक्षणिक स्तर, आयु और सामाजिक स्थिति से परे है — पढ़े-लिखे डॉक्टर, प्रोफेसर और रिटायर्ड बैंकर्स तक इसका शिकार हो रहे हैं। इसका मूल कारण है मोबाइल पर आने वाली अनजान कॉल्स को समझने में असमर्थता, लगातार संवाद में उलझते जाना और "lack of application of mind" यानी विवेक का क्षरण।

अब तक के मामलों से पता चलता है कि ज्यादातर स्कैम में SIP कॉलिंग का इस्तेमाल हुआ है। इन्हें रोकने के लिए दूरसंचार विभाग (DoT) दक्षिण एशिया से आने वाले सिम बॉक्स घोटाले वाले कॉल्स को केंद्रीकृत डिटेक्शन सिस्टम लागू करके, दूरसंचार सेवा प्रदाताओं के साथ सहयोग करके और अंतरराष्ट्रीय गेटवे नियंत्रण को सख्ती से लागू करके रोक सकता है। इस लड़ाई में IISCPS प्रणाली (International Incoming Spoofed Call Prevention System) और रचक्षुर प्लेटफ़ॉर्म प्रमुख उपकरण साबित हो सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक फ्रॉड की कार्यप्रणाली

1. डिजिटल अरेस्ट स्कैम का तरीका

* अपराधी खुद को सरकारी अधिकारी (TRAI, पुलिस, CBI आदि) बताकर कॉल करते हैं।
* पीड़ित को डराया जाता है — मनी लॉन्ड्रिंग, टैक्स चोरी या अंतरराष्ट्रीय अपराधों के आरोप लगाकर।
* उन्हें रकानूनी सुरक्षारु के नाम पर अपनी सारी जमा पूंजी ट्रांसफर करने को कहा जाता है।
* पीड़ित को मानसिक रूप से अलग-थलग कर दिया जाता है — किसी से बात न करने की हिदायत दी जाती है।
* कॉल पर लगातार दबाव, धमकी और "ऑफिशियल भाषा" का प्रयोग होता है जिससे पीड़ित भ्रमित हो जाता है।

2. मनोवैज्ञानिक हथकंडे

* Fear Conditioning:
* कानून का डर, गिरफ्तारी की धमकी।
* Isolation: परिवार या मित्रों से बात करने से रोकना।
* Authority Illusion: कॉलर की आवाज़ में अधिकार का भ्रम
* Cognitive Overload: लगातार कॉल, दस्तावेज़, OTP और ट्रांजैक्शन से मानसिक थकावट।

केस स्टडी: साउथ दिल्ली के रिटायर्ड डॉक्टर दंपति

* साउथ दिल्ली में एक रिटायर्ड डॉक्टर दंपति से ₹15 करोड़ की ठगी हुई।
* अपराधियों ने TRAI और मुंबई पुलिस के अधिकारी बनकर दो सप्ताह तक उन्हें कॉल किया।
* उन्हें बताया गया कि उनके खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का केस है और पैसा "सीज़" किया जा रहा है।
* डर के कारण दंपति ने अपनी सारी जमा पूंजी ट्रांसफर कर दी।
* मामला IFSO (Intelligence Fusion and Strategic Operations) को सौंपा गया।

अन्य प्रमुख मामले

तिथि	पीड़ित की प्रोफाइल	ठगी की राशि	अवधि
Dec 2025	महिला	₹1.3 करोड़	1 माह
Nov 2025	वृद्ध पुरुष	₹1 करोड़	कुछ दिन
Sept 2025	रिटायर्ड बैंकर	73 वर्षीय	जानकारी नहीं -
March 2025	II निवासी	90 वर्षीय GK- ₹3.4 करोड़	-
Oct 2024	(दिल्ली)	जापानी प्रोफेसर ₹7 लाख	-

मुख्य कारण

* अनजान कॉल्स को गंभीरता से लेना।
* मोबाइल कॉल को बार-बार काटने के बजाय संवाद में उलझते जाना।
* डर और भ्रम की स्थिति में विवेक का क्षरण।
* डिजिटल साक्षरता की कमी।
* साइबर फ्रॉड के नए तरीकों की जानकारी का अभाव।

समाधान और सुझाव

* नागरिकों के लिए:
* अनजान कॉल्स को तुरंत काटें, विशेषकर जब वे सरकारी अधिकारी बनकर डराएं।
* किसी भी कानूनी कार्रवाई की धमकी पर स्थानीय पुलिस से संपर्क करें।
* कभी भी किसी के कहने पर पैसा ट्रांसफर न करें।
* साइबर हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत शिकायत दर्ज करें।

निष्कर्ष भारत में साइबर अपराध अब केवल तकनीकी नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध बन चुका है। "डिजिटल अरेस्ट" जैसे स्कैम इस बात का प्रमाण हैं कि डर, भ्रम और अधिकार का भ्रम किसी को भी ठग सकता है। इससे लड़ने के लिए नागरिकों को सतर्कता, विवेक और साइबर जागरूकता की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

डिप्रेशन कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक इलाज़ योग्य बीमारी है। सही जानकारी, समय पर पहचान और उचित उपचार है विकल्प

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

डिप्रेशन कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक इलाज़ योग्य बीमारी है। सही जानकारी, समय पर पहचान और उचित उपचार से व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है। मानसिक स्वास्थ्य को भी उतना ही महत्व देना चाहिए जितना शारीरिक स्वास्थ्य को।

डिप्रेशनः कारण, प्रभाव और उपचार

डिप्रेशन (अवसाद) एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्या है, जो व्यक्ति की सोच, भावनाओं और व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह केवल उदासी नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जो लंबे समय तक बनी रह सकती है और दैनिक जीवन को कठिन बना देती है।

डिप्रेशन के कारण डिप्रेशन होने के कई कारण हो सकते हैं, जो शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर जुड़े होते हैंः

1. मानसिक कारण
* अत्यधिक तनाव
* असफलता या निराशा
* आत्मविश्वास की कमी
* किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या अलगाव

2. जैविक कारण
* मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन
* आनुवंशिक कारण (परिवार में पहले से डिप्रेशन का इतिहास)
* हार्मोनल बदलाव

3. सामाजिक कारण
* बेरोज़गारी
* आर्थिक समस्याएँ
* पारिवारिक कलह
* सामाजिक अलगाव
* डिप्रेशन के प्रभाव

डिप्रेशन का असर व्यक्ति के जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ता हैः

1. मानसिक प्रभाव
* लगातार उदासी या खालीपन
* नकारात्मक सोच
* आत्महत्या के विचार
* निर्णय लेने में कठिनाई

2. शारीरिक प्रभाव
* थकान और ऊर्जा की कमी
* नींद न आना या अधिक नींद आना
* भूख में कमी या अधिक खाना
* सिरदर्द और शरीर में दर्द

3. सामाजिक प्रभाव
* लोगों से दूरी बनाना
* काम या पढ़ाई में प्रदर्शन गिरना
* रिश्तों में तनाव

डिप्रेशन का उपचार डिप्रेशन का इलाज संभव है, यदि समय पर सही कदम उठाए जाएँः

1. मनोचिकित्सकीय उपचार
* काउंसलिंग
* साइकोथेरेपी (जैसे CBT – कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी)

2. जीवनशैली में बदलाव
* नियमित व्यायाम
* संतुलित आहार
* योग और ध्यान
* पर्याप्त नींद

3. सामाजिक सहयोग
* परिवार और दोस्तों से बातचीत
* अपनी भावनाओं को किसी प्रोफेशनल काउंसलर से साझा करे।

जिसके लिए आप हमारी वेबसाइट पर Email: info@counsellingwali.com & 9716739398 पर हमसे संपर्क करें।

गाजियाबादः डिप्रेशन से जूझ रहे युवक ने 11वीं मंजिल से कूदकर की आत्महत्या

मकर संक्रांति और हेल्थ – प्रकृति के साथ तालमेल वाली लाइफस्टाइल का संदेश

मकर संक्रांति सिर्फ एक त्योहार नहीं है हेल्थ बनाए रखने का एक क्लासिकल लाइफस्टाइल है।

पिंकी कुंडू

इस दिन, सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और सर्दी की सख्ती धीरे-धीरे कम होने लगती है। ऐसे समय में, शरीर की ज़रूरतें बदल जाती हैं और हमारी परंपरा उसी हिसाब से डाइट और लाइफस्टाइल बताती है।

तिल और गुड़ – नेचुरल हेल्थ प्रोटेक्टर मकर संक्रांति पर तिल खाने का रिवाज है। तिल में कैल्शियम, आयरन और अच्छे फैट होते हैं, जो हड्डियों को मजबूत करते हैं। गुड़ खून को साफ करता है, पाचन को बेहतर बनाता है और ठंड से होने वाली कमजोरी को कम करता है।

सर्दियों में शरीर को गर्म रखने वाले फूड्स संक्रांति के समय, शरीर को गर्मी की जरूरत होती है। बाजरा, ज्वार, चना, मूंगफली जैसी खाने की चीज़ें शरीर में एनर्जी बनाती हैं और इम्यूनिटी बढ़ाती हैं

खुशी, हंसी और मूवमेंट – मेंटल हेल्थ के लिए ज़रूरी पतंग उड़ाना, खेलना और मिलना-जुलना शरीर की मूवमेंट बढ़ाता है और स्ट्रेस कम करता है। खुश मन अच्छी हेल्थ की नींव है।

धूप सेंकना – विटामिन D का नेचुरल सोर्स संक्रांति के बाद सुबह की हल्की धूप शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होती है। इससे विटामिन D मिलता है, हड्डियां मजबूत होती हैं और इम्यूनिटी बेहतर होती है।

संक्रांति बैलेंस्ड लाइफस्टाइल सिखाती है योग, प्राणायाम, सुबह जल्दी उठना और सात्विक डाइट शरीर-मन-दिमाग में बैलेंस बनाए रखती है।

मकर संक्रांति सेहत का त्योहार है हमारी संस्कृति कहती है – सही खान-पान, सही सोच और पॉजिटिव लाइफस्टाइल ही सेहत का असली मंत्र है

आइए इस मकर संक्रांति से एक हेल्दी ज़िंदगी की शुरुआत करें! तिल गुड़ लो और मीठा बोलो

भोगी की सब्जियां - अगर आप भोगी नहीं खाते हैं, तो आप हमेशा बीमार रहते हैं!

पिंकी कुंडू

हमारे पूर्वजों की दी हुई यह कहावत सेहत का अमृत है
* मकर संक्रांति से पहले
* ठंड बढ़ जाती है
* नए अनाज आते हैं और
* किचन सब्जियों की स्वादिष्ट खुशबू से भर जाता है।

घेवर, पापड़ी, वाल, पावटा, चना, मटर, गाजर, बैंगन, गन्ना, तिल यह सब एक साथ लेकुर वाली सब्जी
* तिल की गर्मी
* दालों की ताकत
* गाजर का एसेंस
* बाजरे की एनर्जी

शरीर के लिए सर्दियों में एक नेचुरल सुरक्षा कवच बन जाता है
* कफ-वात को कंट्रोल करता है
* जोड़ों को मजबूत करता है
* स्किन को चमकदार बनाता है
* इम्यूनिटी बढ़ाता है।

महंगी दवाओं से बेहतर, आपकी थाली में यह हेल्थ बेहतर है
* भोगी की असली जोड़ी
* तीखी सब्जियां
* बाजरे की रोटी
* मक्खन का गोला = स्वर्ग की खुशी
* भोगी का मतलब है
* किसान का सम्मान
* मां के हाथ का प्यार
* संस्कृति की खुशबू

इस साल भोगी सब्जियां खाते समय
* सिर्फ स्वाद नहीं
* बचपन याद करें
* बलिराजा का शुक्रिया अदा करें और परंपरा को बनाए रखें।

यह कोई सब्ज़ी नहीं है ... यह हमारी सेहत और रिश्तों की विरासत है

हेल्थ ही सफलता की कुंजी है!

आयुर्वेद के अनुसार वर्ष के सबसे ठंडे 14 दिन

पिंकी कुंडू

शरीर को बचाने और सशक्त बनाने का स्वर्णकाल! इन दिनों क्या करें, क्या न करें

जब शीत ऋतु अपने चरम पर होती है, तब आयुर्वेद इसे केवल ठंड का मौसम नहीं, बल्कि शरीर की अग्नि, बल और रोग - प्रतिरोधक क्षमता की परीक्षा का समय मानता है।

आयुर्वेदिक ग्रंथों में वर्ष के सबसे ठंडे 14 दिन को विशेष रूप से महत्वपूर्ण बताया गया है।

यह समय प्रायः पौष – माघ संधि (जनवरी के आसपास) आता है, जब सूर्य की उष्णता न्यूनतम और वातावरण में शीत अधिकतम होता है। 8 जनवरी से 21 जनवरी तक - यह तिथियाँ हर वर्ष 1–2 दिन आगे - पीछे हो सकती हैं, लेकिन यही काल सबसे अधिक ठंड वाला माना जाता है।

आयुर्वेद क्या कहता है इन 14 दिनों के बारे में? आयुर्वेद के अनुसार, जब बाहरी ठंड बढ़ती है, तब शरीर की जठराग्नि (Digestive Fire) स्वाभाविक रूप से प्रबल हो जाती है, क्योंकि शरीर अंदर की गर्मी को बचाने का प्रयास करता है। यही कारण है कि इन दिनों भारी, स्निग्ध और पौष्टिक आहार पचाने की क्षमता बढ़ जाती है।

*** आयुर्वेदिक श्लोक**

"शिशिरे वर्धते वह्निः पवनश्च प्रकोप्यते।"

चरक संहिता

* अर्थ शीत ऋतु में पाचन अग्नि प्रबल होती है, परंतु वात दोष भी बढ़ने लगता है। इसलिए संतुलन आवश्यक है।

इन 14 दिनों में शरीर के भीतर क्या परिवर्तन होते हैं?
* जठराग्नि तीव्र होती है
* वात दोष का प्रकोप बढ़ता है
* त्वचा शुष्क होने लगती है
* जोड़ और नसें अधिक संवेदनशील हो जाती हैं
* ठंड से कफ जमने लगता है
* इसी कारण आयुर्वेद इन दिनों को सावधानी और साधना का काल मानता है।

इन 14 सबसे ठंडे दिनों में क्या करें? (Ayurvedic Do's)

1. उष्ण, स्निग्ध और पौष्टिक आहार लें
* घी, तिल का तेल
* मूंग दाल, उड़द दाल
* गेहूं, बाजरा, ज्वार
* गुड़, तिल, मूंगफली

*** श्लोक**

"स्निग्धोष्णं गुरु चान्नं शिशिरे हितमिष्यते।"
* अर्थ शीत ऋतु में स्निग्ध, उष्ण और भारी भोजन हितकारी होता है।

2. अभ्यंग (तेल मालिश) को दिनचर्या बनाएं
* तिल तेल से प्रतिदिन शरीर की मालिश करें, यह वात को शांत करता है, जोड़ों को मजबूत बनाता है और त्वचा को शुष्क होने से बचाता है।

3. गुनगुना पानी और हर्बल काढ़े
* अदरक + तुलसी + काली मिर्च का काढ़ा
* गुनगुना पानी पीना
* यह कफ को पिघलाता है और अग्नि को संतुलित रखता है।

4. धूप सेवन और अग्नि ताप
* सुबह की हल्की धूप लेना
* अग्नि ताप (अलाव/धूप के पास बैठना)
* यह शरीर की प्राकृतिक ऊष्मा को संतुलित करता है।

5. योग और प्राणायाम
* सूर्य नमस्कार
* भस्त्रिका
* अनुलोम – विलोम
* ये अभ्यास ठंड से जमी ऊर्जा को सक्रिय करते हैं।

इन दिनों क्या न करें? (Ayurvedic Don'ts)
* ठंडा पानी या फ्रिज का भोजन
* दही, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स
* रात में जागना
* उपवास या बहुत हल्का भोजन
* बिना तेल लगाए स्नान
* श्लोक संकेत करता है शीत ऋतु में रूक्षता (सूखापन) बढ़ाने वाले आहार-विहार रोग को जन्म देते हैं।

कम ज्ञात लेकिन सत्य तथ्य (Rare but True Ayurvedic Facts)
* इन 14 दिनों में की गई लापरवाही पूरे वर्ष की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर सकती है।
* शीत ऋतु में सही आहार लेने से शरीर प्राकृतिक रूप से बल और ओज का निर्माण करता है।
* आयुर्वेद के अनुसार, इन दिनों का घी सेवन भविष्य के वात रोगों को कम करता है।
* जो लोग इन दिनों वात को संतुलित रखते हैं, उनमें गठिया और सर्दी-खांसी कम होती है।
* यह काल रसायन चिकित्सा (Body Rejuvenation) के लिए श्रेष्ठ माना गया है।

*** निष्कर्ष** आयुर्वेद के अनुसार वर्ष के सबसे ठंडे ये 14 दिन शरीर को कमजोर करने के नहीं, बल्कि सशक्त बनाने के दिन हैं — यदि सही आहार, दिनचर्या और विचार अपनाए जाएँ।
* याद रखें जो इन 14 दिनों को समझ गया, उसने पूरे वर्ष के स्वास्थ्य की नींव रख दी।

समय सीमा पूरे (एक्सपायर) हो चुके बिस्किट खाने से क्या हो सकता है? एक्सपर्ट्स ने चेतावनी दी है!

"पिंकी कुंडू"

नागपुर-इंदौर फ्लाइट में 3 घंटे की देरी के बाद, यात्रियों को कथित तौर पर एक्सपायर हो चुके बिस्किट परोसे गए।

इस घटना के बाद, एक ज़रूरी सवाल उठता है — एक्सपायर हो चुका खाना खाना कितना खतरनाक है?

एक्सपर्ट्स क्या कहते हैं, जानते हैं

शॉर्ट टर्म असरः
* फ़ूड पॉइज़निंग
* मतली, उल्टी, डायरिया
* पेट में ऐंठन/ऐंठन
* मोल्ड एलर्जी – खुजली, सूजन, गॉलस्टोन

लॉन्ग टर्म असरः
* लगातार पाचन की दिक्कतें
* IBS (इरिटेबल बाउल सिंड्रोम)
* IBD (इन्फ्लेमेटरी बाउल डिज़ीज़)
* साल्मोनेला या E. कोलाई इन्फेक्शन
* न्यूट्रिशनल वैल्यू कम होने के कारण - विटामिन और मिनरल की कमी

खासकर बच्चों, बुज़ुर्गों, डायबिटीज़ के मरीज़ों और कमज़ोर इम्यून सिस्टम वाले लोगों को ज़्यादा सावधान रहना चाहिए।

"बेस्ट बिफोर", "यूज़ बाय" और "एक्सपायरी" में अंतर

बेस्ट बिफोर
* → क्वालिटी (स्वाद, टेक्सचर) कम हो सकती है
* → आमतौर पर स्नैक्स, कोल्ड ड्रिंक्स

यूज़ बाय / एक्सपायरी डेट
* → सीधे सुरक्षा से जुड़ा
* → दूध, मीट, दवाओं के लिए बहुत ज़रूरी
* → डेट के बाद इस्तेमाल करना खतरनाक

किन बातों का ध्यान रखें?
1. पैकेज्ड फूड खरीदते समय एक्सपायरी / यूज़ बाय डेट चेक करें
2. जब भी हो सके ताज़ा खाना खाएं
3. ज़्यादा चीनी, नमक और सैचुरेटेड फ़ैट वाली खाने की चीज़ों से बचें
4. अगर आपने गलती से एक्सपायर हो चुका खाना खा लिया है, तो लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें
5. अगर आपको लगातार पाचन की समस्या है, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

नींबू, अमृत जैसा कई कामों वाला फल – जानें इसके हेल्थ बेनिफिट्स

पिंकी कुंडू

विटामिन C का एक बड़ा सोर्स नींबू में विटामिन C भरपूर होता है। यह एक पावरफुल एंटीऑक्सीडेंट है और शरीर में फ्री रेडिकल्स को खत्म करता है।

* दिल की बीमारी, स्ट्रोक और हाई/लो ब्लड प्रेशर के खतरे को कम करने में मदद करता है।
* एक मीडियम साइज़ के नींबू में लगभग 31 mg विटामिन C होता है।

वज़न घटाने में मदद करता है नींबू में पॉलीफेनोल एंटीऑक्सीडेंट –
* ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मदद करता है
* इंसुलिन रेजिस्टेंस को कम करने में मदद करता है
* टाइप - 2 डायबिटीज का खतरा कम कर सकता है।
* स्किन को हेल्दी और चमकदार बनाए रखता है
* झुर्रियां कम करने में मदद करता है
* स्किन की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करता है
* धूप से होने वाले नुकसान से बचाता है

पाचन को बेहतर बनाता है सुबह गर्म पानी में नींबू पीने से –
* कब्ज से राहत मिलती है
* पाचन को बेहतर बनाने में मदद करता है (आयुर्वेद के अनुसार)

नेचुरल ब्रेथ फ्रेशनर
* लहसुन, प्याज, मछली खाने के बाद सांस की बदबू कम करने में मदद करता है।
* नींबू लार बढ़ाता है।
* किडनी स्टोन का खतरा कम कर सकता है

नींबू में साइट्रिक एसिड — किडनी स्टोन का खतरा कम करने में मदद करता है और छोटे स्टोन को तोड़ने में मदद करता है

एनीमिया में फायदेमंद
* नींबू में थोड़ी मात्रा में आयरन होता है और दूसरे खाने की चीजों से आयरन का एब्जॉर्प्शन बढ़ाता है। दिल को हेल्दी रखता है
* विटामिन C, फाइबर और प्लांट कंपाउंड दिल की बीमारी और स्ट्रोक का खतरा कम करने में मदद करता है।

हनुमान चालीसा एवं बजरंग बाण का चमत्कार

पिंकी कुंडू

आज हर व्यक्ति अपने जीवन मे सभी भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति के लिये भौतिकता की दौड मे भागते हुए किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। एवं व्यक्ति उस समस्या से ग्रस्त होकर जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता है।

व्यक्ति उस समस्या से अति सरलता एवं सहजता से मुक्ति तो चाहता है पर यह सब केसे होगा? उस की उचित जानकारी के अभाव में मुक्त हो नहीं पाते और उसे अपने जीवन में आगे गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं होता।

ऐसे मे सभी प्रकार के दुख एवं कष्टों को दूर करने के लिये अचुक और उत्तम उपाय है हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण ही क्यों ? क्योकि वर्तमान युग में श्री हनुमान जी शिवजी के एक एसे अवतार है जो अति शीघ्र प्रसन्न होते है जो अपने भक्तो के समस्त दुखो को हरने मे समर्थ है। श्री हनुमान जी का नाम स्मरण करने मात्र से ही भक्तो के सारे संकट दूर हो जाते हैं। क्योकि इनकी पूजा - अर्चना अति सरल है, इसी कारण श्री हनुमान जी जन साधारण मे अत्यंत लोकप्रिय है। इनके मंदिर देश - विदेश सवत्र स्थित हैं। अतः भक्तों को पहुंचने में अत्याधिक कठिनाई भी नहीं आती है। हनुमानजी को प्रसन्न करना अति सरल है

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी बिना किसी विशेष पूजा अर्चना से अपनी दैनिक दिनचर्या से थोडा सा समय निकाल ले तो उसकी समस्त परेशानी से मुक्ति मिल जाती है।

"यह न तो सुनी सुनाई बात है ना किसी किताब मे लिखी बात है, यह स्वयं हमारा निजी एवं हमारे साथ जुडे लोगो के अनुभत है।"

उपयोगी जानकारी ,,,,हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के नियमित पाठ से हनुमान जी की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए प्रस्तुत हैं कुछ उपयोगी जानकारी ..

* नियमित रोज सुभह स्नान आदि से निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर ही पाठ का प्रारम्भ करे।
* नियमित पाठ में शुद्धता एवं पवित्रता अनिवार्य है।
* हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ करते समय धूप-दीप अवश्य लगाये इस्से चमत्कारी एवं शीघ्र प्रभाव प्राप्त होता है।
* दीप संभव न होतो केवल अगरबत्ती जलाकर ही पाठ करे।
* कुछ विद्वानो के मत से बिना धूप से हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ प्रभाव हीन होता है।
* यदि संभव हो तो प्रसाद केवल शुद्ध घी का चढाए अन्यथा न चढाए।
* जहा तक संभव हो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे ।

* यदि घर मे अलग से पूजा घर की व्यवस्था हो तो वास्तु शास्त्र के हिसाब से मूर्ति रखना शुभ होगा। नही तो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे।
* यदि मूर्ति हो तो ज्यादा बडी न हो एवं मिट्टी कि बनी नही रखे।
* मूर्ति रखना चाहे तो बेहतर है सिर्फ़ किसी धातु या पत्थर की बनी मूर्ति रखे।
* हनुमान जी का फोटो/ मूर्ति पर सुखा सिंदूर लगाना चाहिए।
* नियमित पाठ पूर्ण आस्था, श्रद्धा और सेवा भाव से की जानी चाहिए। उसमे किसी भी तरह की शंका या संदेह न रखे।
* सिर्फ़ देव शक्ति की आजमाइस के लिये यह पाठ न करे या
* किसी को हानि, नुक्सान या कष्ट देने के उद्देश्य से कोइ पूजा पाठ ना करे।
* ऐसा करने पर देव शक्ति या इश्वरीय शक्ति बुरा प्रभाव डालती है या अपना कोई प्रभाव नहीं दिखाती ! हमने प्रत्यक्ष देखा है।
* ऐसा प्रयोग करने वालो से हमार विनम्र अनुरोध है कृप्या यह पाठ ना करे।
* समस्त देव शक्ति या इश्वरीय शक्ति का प्रयोग केवल शुभ कार्य उद्देश्य की पूर्ति के लिये या जन कल्याण हेतु करे।
* ज्यादातर देखा गया है की १ से अधिक बार पाठ करने के उद्देश्य से समय के अभाव मे जल्द से जल्द पाठ कने मे लोग गलत उच्चारण करते है। जो अनुचित है।
* समय के अभाव हो तो ज्यादा पाठ करने कि अपेक्षा एक ही पाठ करे पर पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा से करे।
* पाठ से ग्रहों का अशुभत्व पूर्ण रूप से शांत हो जाता है।
* यदि जीवन मे परेशानियों और शत्रु घेरे हुए है एवं आगे कोई रास्ता या उपाय नहीं सुझ रहा तो डरे नही नियमित पाठ करे आपके सारे दुख - परेशानियां दूर हो जायेगी अपनी आस्था एवं विश्वास बनाये रखे।

आज गंगा सागर यात्रा विशेष

सारे तीरथ बार-बार गंगा सागर एक बार जाने क्यों

पिंकी कुंडू

गंगा सागर को तीर्थों का पिता कहा जाता है, कहने का तात्पर्य है कि गंगा सागर का अन्य तीर्थों की अपेक्षा अत्यधिक महत्व है। शायद यही कारण है कि जन साधारण में यह कहावत बहुत प्रचलित है कि- "सब तीरथ बार - बार, गंगा सागर एक बार।"

'गंगा जिस स्थान पर समुद्र में मिलती है, उसे गंगा सागर कहा गया है। गंगा सागर एक बहुत सुंदर वन द्वीप समूह है जो बंगाल की दक्षिण सीमा में बंगाल की खाड़ी पर स्थित है। प्राचीन समय में इसे पाताल लोक के नाम से भी जाना जाता था। कलकत्ते से यात्री प्रायः जहाज में गंगा सागर जाते हैं।

यहां मेले के दिनों में काफी भीड़-भाड़ व रौनक रहती है लेकिन बाकी दिनों में शांति एवं एकाकीपन छाया रहता है।

तीर्थ स्थान-सागर द्वीप में केवल थोड़े से साधु ही रहते हैं। यह अब वन से ढका और प्रायः जनहीन है। इस सागर द्वीप में जहां गंगा सागर मेला होता है, वहां से एक मील उत्तर में वामनखल स्थान पर एक प्राचीन मंदिर है।

इस समय जहां गंगा सागर पर मेला लगता है, पहले यहीं गंगाजी समुद्र में मिलती थी, किंतु अब गंगा का मुहाना पीछे हट गया है। अब गंगा सागर के पास गंगाजी की एक छोटी धारा समुद्र से मिलती है। आज यहां सपाट मैदान है और जहां तक नजर जाती है वहां केवल घना जंगल।

मेले के दिनों में गंगा के किनारे पर मेले के लिए स्थान बनाने के लिए इन जंगलों को कई मीलों तक काट दिया जाता है। गंगा सागर का मेला मकर संक्रांति को लगता है। खाने-पीने के लिए होटल, पूजा-पाठ की सामग्री व अन्य सामानों की भी बहुत-सी दुकानें खुल जाती हैं।

सारे तीर्थों का फल अकेले गंगा सागर में मिल जाता है। संक्रांति के दिन गंगा सागर में स्नान का महात्म्य सबसे बड़ा माना गया है। प्रातः और दोपहर स्नान और मुण्डन - कर्म होता है। यहां पर लोग श्राद्ध व पिण्डदान भी करते हैं।

कपिल मुनि के मंदिर में जाकर दर्शन करते हैं, इसके बाद लोग लौटते हैं और पांचवें दिन मेला समाप्त हो जाता है। गंगा सागर से कुछ दूरी पर कपिल ऋषि का सन्1973 में बनाया गया नया मंदिर है जिसमें बीच में कपिल ऋषि की मूर्ति है।

इस मूर्ति के एक तरफ राजा भगीरथ को गोद में लिए हुए गंगाजी की मूर्ति है तथा दूसरी तरफ राजा सगर तथा हनुमान जी की मूर्ति है। इसके अलावा यहां सांख्य योग के आचार्य कपिलानंद जी का आश्रम, महादेव मंदिर, योगेंद्र मठ, शिव शक्ति-महानिर्वाण आश्रम और भारत सेवाश्रम संघ का विशाल मंदिर भी है।

रामायण में एक कथा मिलती है जिसके अनुसार कपिल मुनि किसी अन्य स्थान पर तपस्या कर रहे थे। ऐसे ही समय में अयोध्या के सूर्यवंशी राजा सगर एक अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान करने लगे। उनके अश्वमेध यज्ञ से डरकर इंद्र ने राक्षस रूप धारण कर यज्ञ के अश्व को चुरा लिया और पाताल लोक में ले जाकर कपिल के आश्रम में बांध दिया।

राजा सगर की दो पत्नियां थीं- केशिनी और सुमति। केशिनी के गर्भ से असमंजस पैदा हुआ और सुमति के गर्भ से साठ हजार पुत्र। असमंजस बड़ा ही उद्धत प्रकृति का था। वह प्रजा को बहुत पीड़ा देता था। अतः सगर ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया था।

अश्वमेध का घोड़ा चुरा लिये जाने के कारण सगर बड़ी चिंता में पड़ गये। उन्होंने अपने साठ हजार पुत्रों को अश्व ढूंढने के लिए कहा। साठों हजार पुत्र अश्व ढूंढते ढूंढते-ढूंढते पाताल लोक में पहुंच गये।

वहां उन लोगों ने कपिल मुनि के आश्रम में यज्ञीय अश्व को बंधा देखा। उन लोगों ने मुनि कपिल को ही चोर समझकर उनका काफी अपमान कर दिया। अपमानित होकर ऋषि कपिल ने सभी को शाप दिया- 'तुम लोग भस्म हो जाओ।

' शाप मिलते ही सभी भस्म हो गये। पुत्रों के आने में विलंब देखकर राजा सगर ने अपने पौत्र अंशुमान, जो असमंजस का पुत्र था, को पता लगाने के लिए भेजा।

अंशुमान खोजते-खोजते पाताल लोक पहुंचा। वहां अपने सभी चाचाओं को भस्म रूप में परिणत देखा तो सारी स्थिति समझ गया। उन्होंने कपिल मुनि की स्तुति कर प्रसन्न किया। कपिल मुनि ने उसे घोड़ा ले जाने की अनुमति दे दी और यह भी कहा कि यदि राजा सगर का कोई वंशज गंगा को वहां तक ले आये तो सभी का उद्धार हो जाएगा।

अंशुमान घोड़ा लेकर अयोध्या लौट आया। यज्ञ समाप्त करने के बाद राजा सगर ने 30 हजार वर्षों तक राज्य किया और अंत में अंशुमान को राजगद्दी देकर स्वर्ग सिधार गये। अंशुमान ने गंगा को पृथ्वी पर लाने का काफी प्रयत्न किया, लेकिन सफल नहीं हो पाया। अंशुमान के पुत्र दिलीप ने दीर्घकाल तक तपस्या की लेकिन वह भी सफल नहीं हो पाया।

दिलीप के पुत्र भगीरथ ने घोर तपस्या की। गंगा ने आश्वासन दिया कि मैं जरूर पृथ्वी पर आऊंगी, लेकिन जिस समय मैं स्वर्गलोक से पृथ्वी पर आऊंगी, उस समय मेरे प्रवाह को रोकने के लिए कोई उपस्थित होना चाहिए। भगीरथ ने इसके लिए भगवान शिव को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने गंगा को अपनी जटा में धारण कर लिया। भगीरथ ने उन्हें पुनः प्रसन्न किया तो शिवजी ने गंगा को छोड़ दिया।

गंगा शिवजी के मस्तक से सात स्रोतों में भूमि पर उतरी। ह्लादिनी, पावनी और नलिनी नामक तीन प्रवाह पूर्व की ओर चल गये, वक्षु, सीता तथा सिंधु नामक तीन प्रवाह पश्चिम की ओर चले गये और अंतिम एक प्रवाह भगीरथ के बताए हुए मार्ग से चलने लगा।

भगीरथ पैदल गंगा के साथ नहीं चल सकते थे, अतः उन्हें एक रथ दिया गया। भगीरथ गंगा को लेकर उसी जगह आये जहां उनके प्रपितामह आदि भस्म हुए थे। गंगा सबका उद्धार करती हुई सागर में मिल गयी। भगीरथ द्वारा लाये जाने के कारण गंगा का एक नाम भागीरथी भी पड़ा।

जहां भगीरथ के पितरों का उद्धार हुआ, वही स्थान सागर द्वीप या गंगासागर कहलाता है। गंगा सागर से कुछ दूरी पर कपिल ऋषि का सन्1973 में बनाया गया नया मंदिर है जिसमें बीच में कपिल ऋषि की मूर्ति है। उस मूर्ति के एक तरफ राजा भगीरथ को गोद में लिए हुए गंगाजी की मूर्ति है तथा दूसरी तरफ राजा सगर तथा हनुमान जी की मूर्ति है।

भगवान शिव की पाँच पुत्रियाँ – शिव पुराण में वर्णित अद्भुत कथा

पिंकी कुंडू

जब भी भगवान शिव के परिवार की चर्चा होती है, तो सर्वप्रथम श्री गणेश और कार्तिकेय जी का नाम लिया जाता है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि शिव पुराण में भगवान शिव और माता पार्वती की पाँच पुत्रियों का भी उल्लेख मिलता है।

आज हम आपको उसी दिव्य और रहस्यमयी कथा से परिचित कराने जा रहे हैं। शिव पुराण के अनुसार, एक समय भगवान शिव और माता पार्वती एक सरोवर के तट पर ध्यान मग्न थे। उसी समय भगवान शिव के मुख पर एक मंद मुस्कान प्रकट हुई। उस दिव्य मुस्कान से पाँच मोती निकलकर सरोवर में जा गिरे। इन पाँच मोतियों से पाँच कन्याओं का जन्म हुआ, किंतु ये कन्याएँ मनुष्य रूप में नहीं बल्कि नाग रूप में उत्पन्न हुईं। पुत्रियों के साथ भगवान शिव का वात्सल्य ध्यान में लीन होने के कारण माता पार्वती को इस घटना का ज्ञान नहीं था, परंतु महादेव अपनी संतानों के जन्म से भली-भांति परिचित थे।

भगवान शिव अपनी अन्य संतानों की भाँति इन पाँच नाग कन्याओं से भी अत्यंत प्रेम करते थे और प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उनके साथ खेलने सरोवर जाया करते थे।

एक दिन माता पार्वती को आश्चर्य हुआ कि भगवान शिव प्रतिदिन इतनी भोर में कहाँ जाते हैं। सत्य जानने की इच्छा से वे भगवान शिव के पीछे-पीछे चल पड़ीं।

सरोवर पहुँचकर उन्होंने देखा कि महादेव उन पाँच नाग कन्याओं पर पिता की भाँति अपार स्नेह लुटा रहे हैं। पत्नी-भाव से पूर्ण माता पार्वती के मन में यह भय उत्पन्न हुआ कि कहीं ये नाग कन्याएँ महादेव को हानि न पहुँचा दें। इसी आशंका के कारण माता पार्वती ने उन कन्याओं का अंत करने का विचार किया। तभी भगवान शिव ने उनकी मंशा को समझकर उन्हें रोक लिया और सम्पूर्ण सत्य से अवगत कराया।

यह जानकर कि वे स्वयं उन कन्याओं की माता हैं, माता पार्वती का भ्रम दूर हो गया।

शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव की इन पाँच नाग कन्याओं के नाम हैं:

जया, विषहर, शामिलबारी, देव और दोतली।

भगवान शिव ने अपनी इन पुत्रियों को एक विशेष वरदान भी प्रदान किया।

इस वरदान के अनुसार, जो भी भक्त भगवान शिव की पूजा के साथ - साथ इन नाग कन्याओं की भी श्रद्धा से पूजा करेगा

* उसके परिवार को सर्पदंश का भय नहीं रहेगा
* घर में धन-धान्य और समृद्धि की कभी कमी नहीं होगी

*** हर हर महादेव**

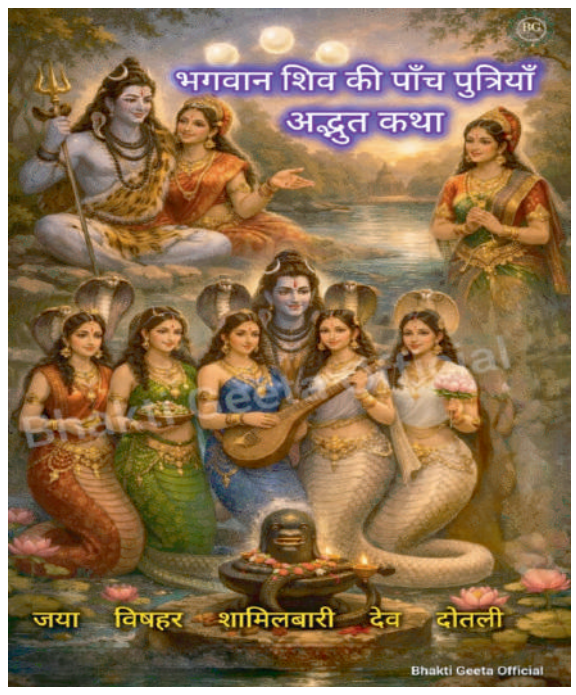

विवाह और मांगलिक दोष की भ्रामकता

पिंकी कुंडू

मंगल मेष और व्रश्चिक राशियों का स्वामी, मकर में उच्च और कर्क राशि में नीचस्थ होता है। इस ग्रह की सातवीं दृष्टि की अपेक्षा चौथी और आठवीं दृष्टि भी महत्वपूर्ण है।

व्यक्ति की जन्म कुंडली मे मंगल का योग उसके जीवन की दशा बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी अच्छी दशा उसे बेहद कामयाब बनाती है। वहीं बुरी दशा उससे सब कुछ छीन भी सकती है।

जन्म कुंडली के1,4,7,8,12 भावों में पाप प्रभाव में हीं इसकी उपस्थिति जातक को मांगलिक घोषित करती तो है, लेकिन कई स्थितियां ऐसी भी होती हैं जिनके कारण जातक का मंगल दोष भंग हो जाती है।

आज कल मांगलिक होने,एवम मांगलिक होते हुए भी मांगलिक न होने बारे बहुत अधिक मत बना दिए गए हैं। विभिन्न प्रदेशों में इसके भिन्न भिन्न पैमाने हैं।

कुंडली मिलान के समय सप्तम भाव के साथ धन, वाणी, कुटुम्ब, सुख,संतान, भाग्य, लाभ और शयन सुख भाव देखते हुए वर-वधू की कुंडी मिलान करना और तुलनात्मक अध्ययन अति आवश्यक है।

केवल कम्प्यूटर अथवा मोबाइल में उपलब्ध कुंडली मिलान साफ्टवेयर से काम चलाना विवाह और दाम्पत्य जीवन में तनाव को दावत देना है।

सातवें घर पर मंगल की पाप दृष्टि या उपस्थिति वैवाहिक जीवन को उथल पुथल कर सकती है । जैसा कि भगवान राम की कुंडली दृष्टब्य है।

यदि मंगल शुभ ग्रहों के साथ हो, शुभ भाव में हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक के जीवन को असीमित ऊचांई तक ले जाता है।

इस प्रकार केवल मंगल से ही सारी कुंडली की व्याख्या नहीं हो सकती, इसके साथ साथ दूसरे ग्रह, भाव, दृष्टि, शुभ, अशुभ, महादशा, दशा, गोचर सब कुछ देखने के बाद ही कुंडली की व्याख्या की जानी चाहिए।

मंगल से बनने वाला अशुभ योग

1. कुंडली में मंगल और राहु एक साथ हों तो अंगारक योग बनता है। यह योग बड़ी दुर्घटना का कारण बनता है, इसके चलते लोगों को सर्जरी और रक्त से जुड़ी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।इंसान का स्वभाव बहुत क्रूर होता है,एवम परिवार के साथ रिश्ते बिगड़ने लगते हैं।

2. कुंडली के पहले, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें स्थान में मंगल पाप प्रभाव में होकर मंगलदोष का योग बनात है।

3. मंगल का यह योग बहुत खतरनाक है. इसे शनि मंगल (अग्नि योग) कहा जाता है. इसके कारण इंसान की जिंदगी में बड़ी और जानलेवा घटनाओं का योग बनता है ।ज्योतिष में शनि को हवा और मंगल को आग माना जाता है। जिनकी कुंडली में शनि मंगल (अग्नि योग) होता है उन्हें हथियार, हवाई हादसों और बड़ी दुर्घटनाओं से सावधान रहना चाहिए। हालांकि यह योग कभी–कभी बड़ी कामयाबी भी दिलाता है।

मंगल से बनने वाले शुभ योग

1. चंद्रम, मंगल के संयोग से लक्ष्मी योग बनता है। यह योग इंसान को धनवान बनाता है। जिनकी कुंडली में लक्ष्मी योग है, उन्हें नियमित दान करना चाहिए।

2. मंगल से बनने वाले पंच-महापुरुष योग को रूचक योग कहते हैं। मंगल मजबूत स्थिति के साथ स्व या उच्च राशि में केंद्रस्थ हो तो रूचक योग बनता है। यह योग इंसान को राजा, भू-स्वामी, सेनाध्यक्ष और प्रशासक जैसे बड़े पद दिलाता है। इस योग वाले व्यक्ति को कमजोर और गरीब लोगों की मदद करनी चाहिए ।

इस लिए मंगल से परेशान न हो। मंगल को मंगल रहने दें, मंगल की कामना करें एवम अपने और जीवन साथी के जीवन में अमंगल न बनने दें। सिर्फ इसका उपाय करें।

गुरु, मानव जीवन को प्रकाश में बदलने का एक मात्र उपाय

पिंकी कुंडू

* गुरु जीवन का आधार होता है
* गुरु केवल व्यक्ति नहीं, एक जीवंत ऊर्जा प्रवाह होता हैं जो अज्ञान के अंधकार से चेतना की ज्योति तक शिष्य को ले जाता हैं।

उनकी उपस्थिति साधक के भीतर छिपे दिव्य तत्व को जाग्रत कर देती है।

भव्यता गुरु का बाह्य प्रभाव है,

दिव्यता उनका आंतरिक स्पर्श।

जो शिष्य आँख मूँदकर श्रद्धा में बैठता है,

उसे गुरु कर्म की ज्योति से प्रकाशित करते हैं और जो शिष्य उनका हाथ थाम लेता है — उसे गुरु अपने समान चेतन स्वरूप बना देते हैं।

गुरु मिट्टी के क्यों न हों — उनकी साधना, तप और दृष्टि में वह शक्ति होती है

जो शिष्य को एकलव्य बना देती है।

दुनिया भले उसे जो समझे — पर सच्चा शिष्य जानता है कि वह ईश्वर की उस योजना के कर्मयोगी प्रतिनिधि हैं, जो मानव जीवन को प्रकाश में बदलने आई है।

संबंध, जीवन का परम ज्ञान

पिंकी कुंडू

संबंध वर्षा जैसा नहीं होना चाहिए जो बरसकर समाप्त हो जाये बल्कि संबंध हवा की तरह होना चहिये जो शांत हो लेकिन सदा आस पास हो।

कभी हँसते हुए छोड़ देता है यह जीवन, कभी रोते हुए छोड़ देता है यह जीवन, न पूर्ण विराम सुख में, न पूर्ण विराम दुःख में, बस जहाँ देखो वहाँ अल्प विराम, छोड़ देता है यह जीवन।

प्यार की डोर सजाये रखो, हृदय को हृदय से मिलाये रखो, क्या लेकर जाना है साथ में इस दुनिया से, मीठे बोल और अच्छे व्यवहार से संबंध को बनाए रखो। कुछ समस्यायें हमारी परीक्षा लेने नही बल्कि हमारे साथ जुडे लोगो की पहचान करवाने आती है

विचार अच्छें तो शुभ ही शुभ, कर्म अच्छे तो लाभ ही लाभ। जीवन स्पष्टतः एक साधना ही है, शुभ संकल्प ही सही आराधना है। स्वयं के पीछे हटने से यदि, सबका भला हो तो, पीछे हट ही जाना चाहिए।

कुछ देने के लिए आदमी की सामर्थ्य नहीं, बल्कि हृदय बड़ा होना चाहिए। हमारे पास क्या है, और कितना है, यह कोई मायने नहीं रखता। हमारी सोच व नियत सर्वोपरि होनी आवश्यक है। हमारा आज बीते हुए कल से अच्छा हो, बस यही है शुभ लाभ।

!!!...Relationship Is All About Trusting Each Other, Helping Each Other, Loving Each Other And Being Crazy Together... !!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।

त्रयोदशी तिथि पर शुक्रवार का संयोग पड़ने के कारण इस दिन को शुक्र प्रदोष व्रत कहा जाएगा

पिंकी कुंडू

प्रदोष व्रत के दिन सूर्यास्त होने से एक घंटें पहले ईशान कोण में किसी एकांत जगह बैठ कर भगवान शिव का जलाभिषेक और ऊं नमः शिवायः का जाप करना चाहिये।

वैदिक पंचांग के अनुसार, माघ माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि 15 जनवरी को रात 8 बजकर 16 मिनट पर शुरू हो रही है, इस तिथि का समापन 16 जनवरी को रात 10 बजकर 21 मिनट पर होगा। प्रदोष व्रत 16 जनवरी दिन शुक्रवार को किया जाएगा।

रात्रि के प्रथम प्रहर को यानि सूर्यास्त के बाद के समय को प्रदोष काल कहा जाता है। प्रदोष काल पूजा मुहूर्त शाम 5.21 से रात 8.00 बजे तक रहेगा।

वेनेजुएला के बाद... अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कुटिल निगाहें ईरान पर हैं

डोनाल्ड ट्रंप भले खुद को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए सबसे योग्य मानें, असल में वे युद्ध अपराधों और मासूमों की जान लेने के दोषी ठहराए जाने चाहिए : संजीव कुमार सिंह

और अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कुटिल निगाहों का अराजक तांडव अपनी चरमसीमा पर पहुंच कर समूची दुनिया को जहां एक ओर तीसरे विश्व युद्ध की आग में झौकने की तैयारी में लगा है : संजीव कुमार सिंह

नई दिल्ली, संजय सिंह। विदेशी मामलों के जानकार ठाकुर संजीव कुमार सिंह एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया राष्ट्रीय नेता इंडियन नेशनल कांग्रेस AICC, मंत्री पद के दावेदार ने ट्रंप की लालची और कुटिल राजनीति पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अब, विश्व मानसिकता पर स्वार्थ का स्थाई ग्रहण लग चुका है। सिद्धान्तों, नियमों और कानूनों को दफन करके सामर्थ की विजय पताका फहराने लगी है। अमेरिका के वर्तमान कृत्यों ने युद्ध के सारे आदर्श नस्तनाबूत कर दिये हैं। मान्यता प्राप्त स्थापित राष्ट्र के राष्ट्राध्यक्ष को गिरफ्तार करके यातनायें देने की एक नई परम्परा का शुभारम्भहो चुका है। और अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कुटिल निगाहों का अराजक तांडव अपनी चरमसीमा पर पहुंचता जा रहा हैं।

श्री सिंह ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप भले खुद को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए सबसे योग्य मानें, असल में वे युद्ध अपराधों और मासूमों की जान लेने के दोषी ठहराए जाने चाहिए। अनियंत्रित शक्ति, अहंकार, लालच और अन्तहीन सम्पत्ति अर्जन की लालची प्रवृत्ति की सजीवता अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष डोनाल्ड ट्रम्प के रूप में सजीव मौजूद हैं जिनके शब्दों से लेकर कृत्यों तक में हमेशा ही विरोधाभाष परिलक्षित होता है। नोबेल शान्ति पुरस्कार पाने, पैसों के अम्बार पर ठहाका लगाने और विश्व को अपने कदमों तले रौंदने की ललक ने उसे अंधा बना दिया है। परिवारजनों की कम्पनियों के लाभहेतु लादेन को छुपाने वाले देश के साथ यारी, मुनाफाखोरी के लिए आक्रमण और चक्रवर्ती बने हेतु कमजोर राष्ट्रों को भय दिखाकर गुलाम बनाने की नीतियां अपनाने के कारण ट्रम्प को अब तुगलक वाली पागल बादशाही मिलने ही वाली है। सत्ता के मद में अंधा हो चुका अमेरिका का वर्तमान राष्ट्राध्यक्ष वास्तव में स्वयं के लिए ही मौत का कुंआ खोद रहा है जिसमें उसकी दर्द की सीमापार करने वाली मौत प्रतीक्षारत है। अनेक मुद्दों पर ट्रम्प की नीतियों ने अमेरिका के दोस्तों को भी दुश्मन की कतार में खड़ा कर दिया है। इन सबके पीछे है शक्ति संतुलन का दम भरने वाले देशों का जबडा विहीन शेर बनकर दहाडाना। चीन, रूस, उत्तरी कोरिया जैसे देशों की अतीतकालीन दहाड़ें, दोस्ती का दम भरकर मुसीबत में साथ देने के वायदे और उन सब की व्यवहारिक परिणति ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। कथनी और करनी में अन्तर का अर्थ अब स्वयं तक सीमित रहने और केवल स्वयं का स्वार्थ साधने की सीमा रेखा के रूप में परिलक्षित होने लगा है। तानाशाही के जीवन्त उदाहरण ने अन्य आतिताइयों को भी अपने लक्ष्य भेदन हेतु मनमाने कृत्यों की छूट देने हेतु प्रेरणा देना शुरू कर दिया है। ऐसे में चीन यदि ताइवान पर कब्जा कर लेता है तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। चरमसीमा पर पहुंचता अराजकता का तांडव समूची दुनिया को जहां एक ओर तीसरे विश्वयुद्धकी आग में झौकने की तैयारी में लगा है।

ट्रंप की रणनीति स्पष्ट दिखाईदेतीहै-ऊर्जाव्यापारपर वर्चस्वस्थापितकरना।

संजीव कुमार सिंह ने आगे कहा कि वेनेजुएला पर तो ट्रंप अपना दावा ठोंक ही चुके हैं, अभी उन्होंने एक तस्वीर भी जारी की है, जिसमें वो खुद को वेनेजुएला का कार्यवाहक राष्ट्रपति दिखा रहे हैं। किसी देश की संप्रभुता और सम्मान के साथ ऐसा मजाक आधुनिक सभ्यता में नहीं किया जा सकता। लेकिन ट्रंप सभ्यता, कूटनीति और नैतिकता के तकाजों को मानते ही नहीं हैं। उन्हें केवल मुनाफे की परिभाषा समझ आती है। ट्रंप ने वेनेजुएला के बाद ग्रीनलैंड हड़पने की चेतावनी दी है। फ्रांस, इटली, जर्मनी जैसे बाकी देश भी अब ट्रंप से सावधान हो चुके हैं। जब अमेरिका की पूंजीवादी विस्तारवादी नीति एशिया या अफ्रीका के देशों को अपनी चपेट में लेती रही। वेनेजुएला, ईरान और अन्य देशों के उदाहरण सामने हैं, जहां तेल को राजनीति और शक्ति प्रदर्शन का हथियार बनाया गया। इसी संदर्भ में अब ईरान को धमकी देना दरअसल उसी सोच का विस्तार है। वेनेजुएला के बाद अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की निगाह ईरान पर हैं। ईरान में दिसंबर 2025 के आखिरी दिनों में आर्थिक संकट से भड़का आंदोलन अब सत्ता के खिलाफ खुले विद्रोह में बदल चुका है। ईरान की सड़कों पर इस समय भयावह मंहार है। एक तरफ सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के खिलाफ सड़कों पर उबाल जारी है, तो वहीं बाहर से अमेरिका इस आग में घी डालने का काम लगातार कर रहा है।

अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप ने एक साथ कई मोर्चेखोलरखलिएहैं।

उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष डोनाल्ड ट्रम्प अब क्यूबा, कोलंबिया, ग्रीनलैंड सरीखे छोटे देशों को बंधक बना कर अमरीका के उपनिवेश बनाने पर आमादा हैं, लिहाजा वेनेजुएला की तरह हमले की धमकियां दे रहे हैं। ईरान के चारों ओर भी अमरीकी विमान, युद्धपोत आदि मंडरा रहे हैं, घातक डेल्टा फोर्स को भी तैनात करने की खबरें हैं। हालांकि अमरीका जानता है कि ईरान कमजोर देश नहीं है। ईरान एक सैन्य ताकत है। वह परमाणु सम्पन्न मिसाइलों से अमरीका के वाशिंगटन और न्यूयॉर्क जैसे शहरों पर विनाशक हमले करने में सक्षम है। अमरीकी सीनेट ने बहुमत से राष्ट्रपति ट्रंप के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया है, जिसके साफ मायने हैं कि अमरीकी संसद की अनुमति के बिना ट्रंप किसी भी देश पर हमला नहीं कर सकते अथवा युद्ध में जाने का सेनाओं को आदेश नहीं दे सकते। फिर भी राष्ट्रपति ट्रंप दुनिया को अलग-अलग मोचर्चों पर धमकाने, हडक्काने में जुटे हैं। ये अद्ध-तानाशाही के संकेत हैं। ट्रंप के यह बयान केवल एक देश के प्रति असंतोष नहीं दर्शाता, बल्कि उस वैश्विक मानसिकता को भी उजागर करता है जिसमें व्यापार, ऊर्जा और कूटनीति को दबाव के औजार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। ईरान कोई नया या कमजोर देश नहीं है जिसे धमकाकर नीतियां बदली जा सकें। ईरान एक मजबूत देश है।

अमेरिका के भीतर ही राष्ट्रपति

आखिर में संजीव कुमार सिंह ने बताया कि अमेरिका सहित कई देशों में ट्रंप की ग़लत नीतियों का विरोध हो रहा है। वेनेजुएला में सैन्य हस्तक्षेप, वहां के राष्ट्रपति को जबरन हटाने जैसे कदमों पर अमेरिकी राजनीति बंटी हुई है। महाभियोग जैसी चर्चाएं यह बताती हैं कि स्वयं अमेरिका में राष्ट्रपति की कार्यशैली पर गंभीर सवाल हैं। ऐसे में ईरान और अन्य देशों को दी जाने वाली धमकियों की विश्वसनीयता और नैतिकता दोनों ही संदिग्ध हो जाती हैं।

स्वदेशी जागरण मंच,देवघर ने विकसित - भारत - 2047' पर आयोजित की विशेष - परिचर्चा

परिवहन विशेष न्यूज

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा स्थानीय स्टेशन रोड स्थित होटल न्यू ग्रेन्ड के भव्य सभागार में भारतवर्ष के विश्व्यात अर्थशास्त्री श्री मान सिद्धार्थ रस्तोगी द्वारा विकसित भारत - 2047 पर विस्तार से विशेष परिचर्चा की गई।

इस परिचर्चा में उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतू हर भारतीय को निवेश व संचय करना चाहिए। साथ ही, सनातन की रक्षा के लिए अपने दशांस को सनातन के लिए खर्च करना चाहिए।

घर-घर गीता, हर-घर गीता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हनुमान चालीसा व श्री मद्भागवत गीता की पाँच-पाँच पुस्तकें लोगों को बॉटनी चाहिए ताकि सनातन के प्रति लोग जागरूक हो सके।

परिचचर्चा के अन्त में श्री रस्तोगी ने कहा कि आज का यह कार्यक्रम झाररखण्ड के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगा। आज झारखण्ड के बदलाव की शिला रख दी गई है।

आज के कार्यक्रम में सभी महानुभावों ने सनातन विस्तार का संकल्प लिया। मौके पर स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत समन्वयक, मनोज सिंह, जिला संयोजक संजय सिंह, प्रभाष गुप्ता, बाबू सोना श्रृंगारी, अमर सिन्हा, पंकज सिंह भदोरिया, राजीव झा, प्रदीप बाजला, राम सेवक सिंह गुंजन, शशि शेखर सिंह, प्रकाश चन्द्र सिंह, सुनील कुमार गुप्ता, राम नरेश, गौरी शंकर सिंह, नीलेश सिंह, अनुज त्यागी, बमशंकर दूवे, शत्रुध्दन, प्रसाद, स्नेह कुमार, बबलू मित्रा इत्यादि मौजूद थे।

भाजपा नेता उपेंद्र सिंह के प्रयासों से बुद्धा पार्क विकास को मिली नई गति, आगरा में खुशी की लहर

क्षेत्रवासी बोलें - भाजपा नेता उपेंद्र सिंह की मेहनत और लगन अब रंग लाने लगी है, बुद्धा पार्क से आगरा की छवि को भी नई दिशा और पहचान मिलेगी। इस अवसर पर उपेंद्र सिंह ने बुद्धा पार्क के विकास कार्यों के लिए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का आभार व्यक्त किया

आगरा। भाजपा नेता उपेंद्र सिंह के सतत प्रयासों से कालिंदी विहार (शाहदरा) स्थित बुद्धा पार्क के विकास कार्यों ने रफ्तार पकड़ ली है, जिससे क्षेत्रवासियों में हर्ष और उल्लास का वातावरण है। आज़ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने बुद्धा पार्क विकास समिति के पदाधिकारियों के साथ पार्क का निरीक्षण किया और चल रहे विकास कार्यों का जायजा लिया।

इस अवसर पर उपेंद्र सिंह ने बुद्धा पार्क के विकास कार्यों के लिए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि 3 अगस्त 2025 को वे नेत्रपाल सिंह और अनिल कुमार के साथ लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से मिले थे। इस दौरान बुद्धा पार्क के विकास सहित विभिन्न जनहितकारी मुद्दों को लेकर ज्ञापन सौंपा गया था, जिस पर मुख्यमंत्री ने सकारात्मक सहमति प्रदान की। इसके पश्चात इस विषय में नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल से भी मुलाकात कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की गई।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि बुद्धा पार्क में हो रहे विकास कार्यों से क्षेत्र की तस्वीर बदल रही है। पार्क के सौंदर्यीकरण, सुविधाओं के विस्तार और व्यवस्थित विकास से यह स्थान भविष्य में न केवल आगरा मंडल बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में एक आदर्श सार्वजनिक स्थल के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएगा।

क्षेत्रवासियों ने कहा कि भाजपा नेता उपेंद्र सिंह की मेहनत और लगन अब रंग लाने लगी है। बुद्धा पार्क का विकास न केवल आसपास के क्षेत्र की सुंदरता बढ़ा रहा है, बल्कि आमजन के लिए एक बेहतर, स्वच्छ और सुरक्षित मनोरंजन स्थल भी प्रदान कर रहा है। इससे आगरा की छवि को भी नई दिशा और पहचान मिलेगी।

निरीक्षण के दौरान नेत्रपाल सिंह, महिपाल सिंह, रविंद्र कुमार, रंजीत सिंह, मिलिंद कुमार, सत्य प्रकाश सहित अनेक प्रमुख समाजसेवी और स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मकर संक्रांति से होता है देवताओं के दिन की गणना का प्रारम्भ पंडित तरसेम वत्स

परिवहन विशेष न्यूज

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट हर संभव धर्म और स्वास्थ्य पर विशेष रूप से कार्य नियमित कर रहा है इस मकर संक्रांति सनातन संस्कृति पर ट्रस्ट के लिए राष्ट्रीय सचिव पंडित तरसेम वत्स ने विस्तार पूर्वक बताया कि मकर संक्रांति का पर्व सूर्य देव के मकर राशि में प्रवेश के साथ ही मनाया जाता है। यह वह क्षण होता है, जब सूर्य उत्तरायण होते हैं और खरमास के बाद शुभ काल आरंभ होता है। धार्मिक दृष्टि से यह समय आत्मशुद्धि और पुण्य अर्जन के लिए अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है।

मकर संक्रांति सनातन संस्कृति का एक अत्यंत पावन और शुभ पर्व है, जो प्रकृति, सूर्य उपासना और मानव जीवन के बीच संतुलन को प्रदर्शित करता है। यह त्यौहार भारत के विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है। उत्तर भारत में इसे मकर संक्रांति, गुजरात और महाराष्ट्र में उत्तरायण, तमिलनाडु में पोंगल तथा असम में माघ बिहू के नाम से जाना जाता है। नाम चाहे अलग हों, लेकिन इस पर्व का मूल भाव एक ही है, और वह है; सूर्य देव की उपासना और दान-पुण्य करना।

मकर संक्रांति का पर्व सूर्य देव के मकर राशि में प्रवेश के साथ ही मनाया जाता है। यह वह क्षण होता है, जब सूर्य उत्तरायण होते हैं और खरमास के बाद शुभ काल आरंभ होता है। धार्मिक दृष्टि से यह समय आत्मशुद्धि और पुण्य अर्जन के लिए अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है। सामान्यत: भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियां चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है।

शास्त्रों के अनुसार, देवताओं के दिन की गणना इस दिन से ही प्रारम्भ होती है, सूर्य जब दक्षिणायन में रहते हैं तो उस अवधि को देवताओं की रात्रि व उत्तरायण के छ: माह को दिन कहा जाता है। सामान्यत: सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छह-छह माह के अन्तराल पर होती है। सर्वविदित है कि पृथ्वी की धुरी २३.५ अंश झुकी होने के कारण भगवान सूर्य छह माह पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध के निकट होते हैं और शेष छह माह दक्षिणी गोलार्द्ध के निकट होते हैं।

मकर संक्रांति का वैज्ञानिक कारण यह है कि इस दिन से सूर्य के उत्तरायण हो जाने से प्रकृति में बदलाव शुरू हो जाता है. शीत के कारण से ठिठुरते लोगों को भगवान सूर्य के उत्तरायण होने से शीत ऋतु से राहत मिलना आरंभ होता है। भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, इसलिए 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का उद्घोष करने वाली भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां के पर्व त्योहार का संबंध काफी कुछ कृषि पर निर्भर करता है। भारत के हर राज्य में मकर संक्रांति को जिस श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है,

महाभारत काल में भीष्म पितामह को मृत्यु की इच्छा का वरदान प्राप्त था। बाणों से भरी शय्या पर लेटे होने के बावजूद उन्होंने दक्षिणायन में प्राण त्याग नहीं किए और सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने की प्रतीक्षा की। ऐसा माना जाता है कि मकर संक्रांति के दिन जब भगवान सूर्य उत्तरायण में प्रवेश कर गये, तब भीष्म पितामह ने प्राण त्याग दिए। मकर संक्रांति के संदर्भ में एक और धार्मिक कथा प्रचलित है, जिसके अनुसार यशोदा माता ने भगवान कृष्ण को पुत्र के रूप में प्राप्त करने के लिए व्रत रखा था। गंगा अवतरण की कथा भी मकर संक्रांति से जुड़ी हुई है। ऐसा कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन मां गंगा ने भागीरथ मुनि का अनुसरण किया और सागर से मिलीं। मकर संक्रांति के दिन तिल का बहुत महत्व है, तिल मिश्रित जल से स्नान, तिल के तेल द्वारा शरीर में मालिश, तिल से ही यज्ञ में आहुति, तिल मिश्रित जल का पान, तिल का भोजन इनके प्रयोग से मकर संक्रांति का पुण्य फल प्राप्त होता है और पाप नष्ट हो जाते हैं। ट्रस्ट के संस्थापक डॉ ह्रदयेश कुमार और आप सभी पदाधिकारियों के ने शुभ अवसर पर शिव मंदिर परिसर बल्लबगढ़ में भंडारे का आयोजन किया।

भारत का राष्ट्र-निर्माण विमर्श बनाम सामाजिक यथार्थ:- किसान,सांप्रदायिक हिंसा और लोकतांत्रिक परीक्षा भूमिका:- एक समग्र विश्लेषण

भारत में सांप्रदायिक हिंसा 2025 :- गिरावट के आंकड़े,गहरी होती सामाजिक दरारें और लोकतंत्र के सामने नई चुनौती

हिंसा का स्वरूप बदलना,अधिक विकेंद्रित, अनियोजित, व्यक्तिगत या भीड़-आधारित होना,समाज के भीतर गहरे अविश्वास और नफरत की निरंतर मौजूदगी को दर्शाता है- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

14 जनवरी 2026 को दिल्ली में आयोजित पोंगल महोत्सव के मंच से भारतीय प्रधानमंत्री का यह कथन कि राष्ट्र निर्माण में किसानों का महत्वपूर्ण योगदान है,केवल एकसांस्कृतिक या औपचारिक वक्तव्य नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना की ओर संकेत करने वाला राजनीतिक-वैचारिक संदेश था। पोंगल, जो कृषि, प्रकृति और श्रम के सम्मान का उत्सव है,उसी भारत का प्रतीक है जिसकी जड़ें खेतों में हैं। किंतु इसी कालखंड में प्रकाशित सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसाइटी एंड सेक्युलरिज़्म (सीएसएसएस) की ताज़ा मॉनिटरिंग रिपोर्ट एक ऐसे भारत की तस्वीर पेश करती है,जहाँ सांप्रदायिक दंगों में गिरावट के बावजूद मॉब लिंचिंग, नफरत आधारित अपराध और पहचान- केंद्रित हिंसा अब भी लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती बने हुए हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है,जिसकी सामाजिक संरचना बहुधर्मी बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक ताने-बाने से निर्मित है। ऐसे समाज में सांप्रदायिक सौहार्द केवल आंतरिक स्थिरता का प्रश्न नहीं,बल्कि वैश्विक लोकतांत्रिक विश्व के लिए एक नैतिक और राजनीतिक संकेतक भी है, इसलिए, यह लेख इन्हीं दो समानांतर सच्चाइयों,आशा और चिंता,के बीच भारत के समकालीन सामाजिक- राजनीतिक परिदृश्य का अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत करता है।यह लेख सीएसएसएस की रिपोर्टिंग पर आधारित है इसकी सटीकता को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

साथियों बात अगर हम कृषि और राष्ट्र-निर्माणः भारतीय सभ्यता की आधारशिला इसको समझनें की करें तोभारत में कृषि केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत संरचना है। सिंधु घाटी से लेकर आधुनिक भारत तक, किसान समाज की स्थिरता, खाद्य सुरक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता का मूल आधार रहा है।प्रधानमंत्री का पोंगल मंच से दिया गया वक्तव्य इसी ऐतिहासिक सत्य को पुनःरेखांकित करता है। वैश्विक संदर्भ में देखें तो आज जब विकसित देश भी खाद्य आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय सुरक्षा का हिस्सा मान रहे हैं,भारत का किसान- केंद्रित विमर्श उसे एक स्थायी विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है। अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ जैसे एफएओ और विश्व बैंक भी मानती हैं कि भारत की कृषि व्यवस्थातमाम चुनौतियों के बावजूद,वैश्विक खाद्य संकट के दौर में एक स्थिर स्तंभ बनी हुई है।पोंगल केवल तमिल संस्कृति का पर्व नहीं,बल्कि यह श्रम, प्रकृति और समुदाय केसामूहिक उत्सव का प्रतीक है। जब प्रधानमंत्री जैसे संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्ति इस पर्व के माध्यम से किसानों को राष्ट्र-निर्माण का नायक बताते हैं, तो यह संदेश केवल घरेलू नहीं बल्कि वैश्विक भी होता है। यह भारत को एक ऐसे देश के रूप में प्रस्तुत करता है जहाँ विकास का मॉडल जमीनी स्तर से जुड़ा है। किंतु यही समावेशी सांस्कृतिक संदेश तब कमजोर पड़ता है,जब समाज के भीतर पहचान- आधारित हिंसा और नफरत की राजनीति सामाजिक ताने-बाने को चोट पहुँचाती है। सीएसएसएस की 2025 की मॉनिटरिंग रिपोर्ट के अनुसार भारत में दर्ज बड़े सांप्रदायिक दंगों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट आई है।यह एक सकारात्मक संकेत है और इसे कानून- व्यवस्था में सुधार,त्वरित प्रशासनिक हस्तक्षेप और न्यायिक सक्रियता से जोड़ा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तरपर यह भारत के लिए एक राहतकारी आंकड़ा है, क्योंकि लंबे समय से वैश्विक मानवाधिकार संगठनों द्वारा भारत में सांप्रदायिक हिंसा को लेकर सवाल उठाए जाते रहे हैं। किंतु रिपोर्ट का दूसरा पक्ष अधिक चिंताजनक है हिंसा समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसने नए, अधिक विकेंद्रीकृत और अप्रत्याशित रूप धारण कर लिए हैं।मॉब लिंचिंगः-भीड़ का उभार और राज्य की परीक्षा मॉब लिंचिंग आधुनिक लोकतंत्र की सबसे भयावह विफलताओं में से एक मानी जाती है। भारत में यह हिंसा अक्सर अफवाह,पहचान

और सामाजिक पूर्वाग्रहों से प्रेरित होती है।सीएसएसएस रिपोर्ट बताती है कि 2025 में मॉब लिंचिंग की घटनाएँ भले ही बड़े दंगों की तरह सुर्खियों में न रही हों, लेकिन उनकी सामाजिक क्षति कहीं अधिक गहरी रही है।अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार विमर्श में मॉब लिंचिंग को अनऑफिशियल जस्टिस सिस्टम के रूप में देखा जाता है, जहाँ राज्य की वैधता और कानून का शासन सीधे चुनौती के घेरे में आ जाता है।नफरत आधारित अपराधः- वैश्विक प्रवृत्ति,भारतीय संदर्भ नफरत आधारित अपराध केवल भारत की समस्या नहीं हैं।अमेरिका यूरोप और एशिया के कई हिस्सों में यह एक उभरती वैश्विक प्रवृत्ति है। किंतु भारत में इसकी जटिलता इस कारण बढ़ जाती है क्योंकि यहाँ पहचान, धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र, इतिहास से गहराई से जुड़ी हुई है। सीएसएसएस रिपोर्ट के अनुसार 2025 में नफरत अपराधों का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया से उपजी गलत सूचनाओं और राजनीतिक ध्रुवीकरण से जुड़ा रहा। यह स्थिति भारत के डिजिटल लोकतंत्र के लिए गंभीर चेतावनी है।पहचानः-आधारित हिंसा और सामाजिक विखंडन पहचान- केंद्रित हिंसा का सबसे बड़ा खतरा यह है कि यह समाज को स्थायी रूप से विभाजित कर देती है। किसान, मजदूर और निम्न- आय वर्ग,जिनका राष्ट्र-निर्माण में सबसे बड़ा योगदान है, वही वर्ग अक्सर ऐसी हिंसा का शिकार बनता है। यह विरोधाभास भारतीय लोकतंत्र के मूल सिद्धांत,समानता और बंधुत्व को कमजोर करता है। अंतरराष्ट्रीय विश्लेषक मानते हैं कि यदि पहचान-आधारित हिंसा पर समय रहते नियंत्रण नहीं पाया गया, तो यह आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता दोनों को प्रभावित कर सकती है।

साथियों बात अगर हम राज्य, नीति और नैतिक जिम्मेदारी इसको समझने की करें तो, प्रधानमंत्री का किसान- सम्मान संदेश तभी सार्थक होगा जब राज्य समान रूप से हर नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करे।सीएसएसएस रिपोर्ट अप्रत्यक्ष रूप से यह सवाल उठाती है कि क्या कानून का कार्यान्वयन हर स्तर पर निष्पक्ष है।अंतरराष्ट्रीय लोकतांत्रिक मानकों के अनुसार, हिंसा की रोकथाम केवल पुलिसिंग का विषय नहीं, बल्कि शिक्षा,सामाजिक संवाद और राजनीतिक जिम्मेदारी का भी प्रश्न है। भारत के लिए यह एक निर्णायक मोड़ है,या तो वह अपने विकास मॉडल को सामाजिक न्याय के साथ जोड़े, या फिर आर्थिक प्रगति के बावजूद सामाजिक असंतोष से जूझता रहे।

साथियों बात अगर हम वैश्विक छवि और भारत की सॉफ्ट पावर इसको समझने की करें तो,भारत आज स्वयं को विश्व गुरु, ग्लोबल साउथ के नेता और लोकतांत्रिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। किसान-केंद्रित सांस्कृतिक आयोजनों और विकासशील अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक सौहार्द इसकी सॉफ्ट पावर का अहम हिस्सा है। किंतु मॉब लिंचिंग और नफरत अपराधों की खबरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में इस छवि को नुकसान पहुँचाती हैं। सीएसएसएस जैसी रिपोर्टें वैश्विक नीति- निर्माताओं और निवेशकों के लिए संकेतक बन जाती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि एक समग्र राष्ट्र- निर्माण की आवश्यकता,14 जनवरी 2026 को पोंगल मंच से दिया गया प्रधानमंत्री का वक्तव्य भारत की आत्मा की आवाज़ है, एक ऐसा भारत जो किसान, श्रम और प्रकृति के सम्मान पर खड़ा है।किंतु सीएसएसएस की 2025 की रिपोर्ट यह याद दिलाती है कि राष्ट्र-निर्माण केवल आर्थिक या सांस्कृतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सुरक्षा की भी कसौटी है। जब तक किसान की मेहनत और नागरिक की सुरक्षा समान रूप से संरक्षित नहीं होंगी, तब तक भारत का राष्ट्र-निर्माण अधूरा रहेगा। अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से भी भारत की सफलता इसी संतुलन में निहित है,विकास के साथ मानवीय गरिमा, और सांस्कृतिक गर्व के साथ सामाजिक सद्भाव।

आज भारत के पूर्व कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी के यहां मकर संक्रांति के अवसर पर चूड़ा दही भोज मे शामिल हुआ।

दक्षिणी दिल्ली के लोकप्रिय सांसद श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी विधायक श्री करतार सिंह तंवर जी द्वारा संजय कॉलोनी भाटी माइंस में आरोग्य मंदिर का शिलान्यास किया गया। उपेन्द्र सिंह महासचिव।

अवैध कालोनियों में प्लाट ना खरीदें नागरिक - एसडीएम अभिनव सिवाच

गांव परनाला व बहादुरगढ़ में अवैध निर्माण पर जिला नगर योजनाकार विभाग की कार्रवाई, जेसीबी की सहायता से गिराए गए अवैध निर्माण

बहादुरगढ़, 14 जनवरी। उपमंडल के गांव परनाला व बहादुरगढ़ की भूमि पर बुधवार को जिला नगर योजनाकार विभाग की टीम द्वारा अवैध निर्माण के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए अवैध निर्माणों को ढाया गया। यह कार्रवाई विभागीय नियमों के तहत की गई।

इस अवसर पर बहादुरगढ़ के एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि लोग अपनी मेहनत की कमाई से अनाधिकृत कॉलोनियों में प्लॉट खरीदने से बचें। उन्होंने कहा कि अवैध कॉलोनियों में घर बनाने के लिए प्लॉट खरीदने से भविष्य में कानूनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अवैध निर्माण और मकान तोड़े भी जा रहे हैं।

एसडीएम ने स्पष्ट किया कि प्रशासन का उद्देश्य अवैध निर्माण पर रोक लगाना और नियोजित विकास को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि प्रशासन नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ आगे भी इसी तरह की सख्त कार्रवाई जारी रखेगा।

जिला नगर योजनाकार (डीटीपी) अंजू जून ने बताया कि गांव परनाला व बहादुरगढ़ की भूमि पर राजस्व संपदा में अवैध निर्माण के खिलाफ तोड़फ़ोड़ अभियान चलाया गया है जिसमें पांच अनधिकृत कॉलोनी जिनका क्षेत्रफल लगभग 17 एकड़ है, 13 ढांचें, तीन डीलर के कार्यालय भी शामील है, 60 डीपीसी और 1500 मीटर सड़क नेटवर्क को जेसीबी की सहायता से तोड़ा गया है।

इस अवसर पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट कार्यकारी अभियंता राजीव डागर एचएसआईआईडीसी बहादुरगढ़ पुलिस और डीपीटी की टीम मौजूद रही।

कानपुर में पकड़ा गया गर्भवती पत्नी और बच्चे का हत्यारा, घटना के बाद हुआ था फरार

सुनील बाजपेई

कानपुर। शराब के नशे में गर्भवती पत्नी और ढाई साल के बेटे को बांके से काट कर हत्या करने वाले युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर आज जेल भेज दिया।

घटना बीते रविवार रात 9 बजे घाटमपुर कोतवाली के गोपालपुर के मजरा सर्देपुर में हुई थी। जिसके बाद आरोपी फरार चल रहा था। उसकी तलाश में तीन पुलिस टीमें लगाई गई थीं। प्राप्त विवरण के मुताबिक सर्देपुर निवासी सुरेंद्र यादव उर्फ स्वामी (35) ट्रक में खलासी का काम करता था। सुरेंद्र तीन भाइयों में सबसे छोटा था। सभी भाई अलग-अलग रहते हैं। सुरेंद्र की शादी 2021 में फतेहपुर के गौरा चुरियारा निवासी रूबी (32) से हुई थी। भाई पप्पू ने बताया- शराब की लत और रोज-रोज के झगड़े के चलते उसका परिवार बिखर गया। भाइयों में बंटवारा हो गया।

डीसीपी दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया- शुरुआती जांच में सामने आया था कि बीते रविवार रात करीब 9 बजे सुरेन्द्र शराब पीकर घर पहुंचा। इस पर पत्नी रूबी ने विरोध किया तो दोनों में झगड़ा हो गया। गुस्साए सुरेंद्र ने बांके से पत्नी के गले पर और ढाई साल के बेटे लवांश के सिर पर कई वार कर उनकी हत्या कर दी।

वारदात के बाद मौके से भाग निकला। देर रात भाई पप्पू घर पहुंचा तो दोनों के शव खून से लथपथ पड़े मिले। फिर पप्पू ने ही पुलिस को सूचना दी। पुलिस पहुंची तो मां-बेटे के शव अगल बगल पड़े थे। कमरे में खून बिखरा था। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज कर पुलिस फरार होने के चलते उसकी तलाश लगातार कर रही थी।

महिलाओं के खिलाफ अपराध और मॉब लिंचिंग असहनीय: यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा

हिना परवीन की निर्मम हत्या और पप्पू अंसारी की मॉब लिंचिंग पर यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा का तीव्र विरोध

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा ने बिहार के मधेपुरा ज़िले की रहने वाली हिना परवीन के साथ हुए अमानवीय बलात्कार एवं हत्या की घटना तथा झारखंड के गोड्डा ज़िले में पप्पू अंसारी की मॉब लिंचिंग के खिलाफ अपने राष्ट्रीय कार्यालय, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर गहरा आक्रोश व्यक्त किया। इस अवसर पर मौलाना नसीमुल हक़ क़ासमी, मोहम्मद काज़िम, मोहम्मद समीउल्लाह, मोहम्मद आलमीन, सरफ़राज़, दिलशाद ,मोहम्मद आज़म, नवाज़ सरवर आदि उपस्थित रहे।

मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफ़िज़ गुलाम सरवर ने कहा कि बिहार के मधेपुरा की महिला हिना परवीन के साथ हुआ दिल दहला देने वाला यह अपराध पूरे देश की अंतरात्मा को झकझोरने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने कहा कि एक महिला के साथ यौन उत्पीड़न के बाद उसकी बेरहमी से हत्या होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सरकारी दावे केवल घोषणाओं तक सीमित रह गए हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसे अपराध दरिंदगी और आपराधिक मानसिकता को दर्शाते हैं। यदि ऐसे अपराधियों को तुरंत और कड़ी सज़ा नहीं दी गई, तो समाज में अराजकता और भय का माहौल और गहरा होगा। उन्होंने मांग की कि हिना परवीन के हत्यारों को तुरंत गिरफ़्तार कर फास्ट ट्रैक अदालत में मुक़दमा चलाया जाए, उन्हें कठोरतम सज़ा दी जाए तथा पीड़ित परिवार को पूर्ण सुरक्षा और उचित मुआवज़ा प्रदान किया जाए।

राष्ट्रीय प्रवक्ता ने झारखंड के गोड्डा ज़िले में पप्पू अंसारी की मॉब लिंचिंग पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि भीड़ द्वारा की जाने वाली हिंसा एक खतरनाक सामाजिक प्रवृत्ति बन चुकी है, जो सीधे तौर पर क़ानून के शासन और संवैधानिक मूल्यों को चुनौती दे रही है। उन्होंने कहा कि यदि क़ानून को अपने हाथ में लेने वालों के ख़िलाफ़ मिसाल कायम नहीं की गई, तो यह सिलसिला और अधिक खतरनाक रूप ले सकता है।

मौलाना नसीमुल हक़ क़ासमी ने स्पष्ट किया कि यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा हर प्रकार के अत्याचार, अन्याय और हिंसा की बिना किसी भेदभाव के निंदा करता है, चाहे पीड़ित किसी भी धर्म, जाति या वर्ग से संबंधित हो। उन्होंने कहा कि मानवता, न्याय और संविधान की रक्षा ही संगठन की मूल सोच और संघर्ष का केंद्र है। उन्होंने देश की मौजूदा स्थिति पर गहरी चिंता भी व्यक्त की।

उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों से मांग की कि महिलाओं के खिलाफ अपराधों और मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं की रोकथाम के लिए कड़े क़ानूनों का प्रभावी और ईमानदार क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, पुलिस और प्रशासन की जवाबदेही तय की जाए तथा पीड़ित परिवारों को त्वरित और सुनिश्चित न्याय प्रदान किया जाए।

खबरदार, राम कहा जो कुत्ते को!

(व्यंग्य आलेख : संजय पराते)

संघी गिरोह और उनकी अगुआई करने वाले मोहन भागवत-नरेंद्र मोदी-अमित शाह का सहारा मंदिर ही है। राम मंदिर आंदोलन भले ही लाल कृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री न बना पाया हो, लेकिन नरेंद्र मोदी इसी आंदोलन के सहारे राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरे और प्रधानमंत्री बने। मोहन भागवत भी आज सत्ता की वह मलाई चाट रहे हैं, जिसकी कल्पना उनके पूर्वजों ने नहीं की थी। अमित शाह के हौसले भी बुलंद है कि एक तड़ीपार उस हैसियत में पहुंच गया है, जहां वह जब चाहे, जिसको चाहे, ठिकाने लगा सकता है।

जब मंदिर में इतनी ताकत आ जाएं कि रोजी-रोटी के मुद्दे गौण हो जाएं, तो भला राजनीति में कौन इस मुद्दे को छोड़ देगा? फिर मंदिर मुद्दे का तो संघ-भाजपा ने पेटेंट करा लिया है, फिर भला और किसमें हिम्मत है इस मुद्दे को उठाकर जुर्माना भरने की? कांग्रेस कोशिश करती रहती है कि नेहरू की धर्मनिरपेक्षता से थोड़ा अलग राह चले-दिखे, संघ-भाजपा से वह ज्यादा धार्मिक दिखें, सत्ता में आने पर संघी गिरोह के बने-बनाए रोडमैप पर चलने की भी कोशिश करती है, लेकिन फिर धड़ाम से गिर पड़ती है। छत्तीसगढ़ में हमने यही देखा। सलाहकारों की सलाह थी कि भाजपा से निपटने भाजपा से ज्यादा 'राम राम' किया जाए, अडानी को हसदेव में बुलाकर चरण पखारे जाएं और भाजपा को बता दिया जाएं कि तेरे से बड़े कॉरपोरेटपरस्त हम। सरकार ने सलाहकारों की बात मानी, लेकिन जनता ने तो सरकार को ही ठुकरा दिया और भाजपा को फिर से बुला लिया, कहा : ऐसे में फिर भाजपा ही क्या बुरी है?

तो मंदिर मुद्दा संघ-भाजपा की जान है। छत्तीसगढ़ में उसे अभी एक शेरू से दुश्मनी हो गई है। एक कुत्ते में शेर की कल्पना की जा सकती है, उसे शेरू कहकर बुलाया जा सकता और हमारे राष्ट्रीय पशु के स्वाभिमान को कोई चोट नहीं पहुंचती। उसे रामू भी कह सकते हैं, जो हमारे घरों में काम करने वाले दलितों का नाम हो सकता है और इससे उनके भी स्वाभिमान को कोई चोट पहुंचने का सवाल ही नहीं है, क्योंकि वर्ण व्यवस्था में कोई दलित अपने स्वाभिमान का दावा भी कैसे कर सकता है? लेकिन किसी कुत्ते के लिए राम नाम का विकल्प भी नहीं दिया जा सकता, क्योंकि इससे किसी हिंदू को पहुंचे या न पहुंचे, संघी गिरोह की आस्था को ठेस जरूर पहुंचती है। खबरदार, अपने कुत्ते का नाम राम रखा तो! संघी लठैत तुम्हारा रामनाम करने के लिए तैयार है। जब तक राम इस देश के राष्ट्रीय भगवान नहीं बन जाते, तब तक आस्था के इस खेल को तो खेलना ही पड़ेगा। इसके बाद भी, जो बचा-खुचा है, उसे रामदेव, आसाराम और राम रहीम आदि-इत्यादि तो मिलकर खेल ही रहे हैं और हिंदुत्व की बुनियाद मजबूत कर रहे हैं। कोई व्यभिचार के आरोप में जेल में बंद है, तो कोई भ्रष्टाचार के आरोप में अदालत की फटकार खा रहा है। लेकिन किसी के राम नाम से बेचारे संघियों का स्वाभिमान आहत नहीं होता, क्योंकि हमाम में सब नंगे हैं।

हमारी मान्यता है कि कण-कण में भगवान है, तो निश्चय ही कुत्ते में भी राम का वास है ही। हमारे धार्मिक ग्रंथों में कुत्ते को भैरव देव का वाहन माना गया है। स्वयं भैरव देव को शिव भगवान का पांचवां अवतार माना जाता है। भगवान शिव और राम एक-दूसरे के आराध्य थे और मिथकों के अनुसार, लंका युद्ध से पहले, राम ने शिव का आशीर्वाद पाने के लिए रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना की थी। हनुमान को भी भगवान शिव का अवतार माना जाता है, जो छाया की तरह राम के सेवक बनकर रहे। तो शिव के अवतार भैरव का वाहन कुत्ता निकृष्ट या कमतर कैसे हो सकता है, जिसे लेकर छत्तीसगढ़ में संघी गिरोह हल्ला मचा रहा है?

वैसे इस देश में कमीने-कुत्तों की कोई कमी नहीं है। देश में कोई मंदिर नहीं बचेगा, तो वह 'कुत्ता मंदिर' भी बनवा लेगा। वैसे पहले से ही कर्नाटक में 'नाई देवस्थान' नामक एक प्रसिद्ध मंदिर है, जो असल में एक कुत्ते का मंदिर है। योगी के उत्तरप्रदेश में बुलंदशहर के पास सिकंदराबाद में साधु लटूरिया बाबा के कुत्ते का मंदिर है। यहां बाबा तो ताकते रह गए, लेकिन मंदिर बन गया है उसके कुत्ते का। यहां होली और दिवाली में मेला लगता है और कुत्ते के सहारे लटूरिया बाबाजी भी जिंदा है। कुत्ता न रहता, तो फिर बाबा को ही कौन पूछता? यह कुत्ता मंदिर उतना ही पुराना है, जितना कि आरएसएस, जो इस समय अपनी सौवीं जयंती मना रहा है। झांसी में 'कुतिया माता' का मंदिर है। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के खपरी गाँव में 'कुकुरदेव' मंदिर है, जिसका निर्माण फणी नागवंशी शासकों ने करवाया था। ये सब वो इतिहास है, जिसके खिलाफ संघी गिरोह युद्ध छेड़े हुए हैं। अब इस कुकुरदेव मंदिर के लिए नाग शासकों के वंशजों को राष्ट्रद्रोही ठहराया जा सकता है। उनका दोष इतना ही नहीं है कि उनके पूर्वजों ने कुकुर मंदिर बनवाया, उन्होंने इसमें देवत्व की भी प्रतिष्ठा कर दी है। जो कुकुरदेव पर आस्था नहीं रखते, अब वे बतंगड़ खड़ा करेंगे कि राम बड़ा या कुकुरदेव? दरअसल, हुआं-हुआं चिल्लाने वाले हिंदुत्व गिरोह को हमारे धर्मग्रंथों में उल्लेखित कुत्तों-कुतियों की महिमा और उन्हें देवता मानकर पूजे जाने वाले मंदिरों के यश का भी कोई ज्ञान नहीं है, उन्हें सिर्फ राम के नाम पर उन्माद फैलाना और आतंकी धौंस जमाना आता है और यह गुंडई-नंगई-कुत्ताई भाजपा सरकार के पूरे संरक्षण में चल रही है।

अब गुजरात में चुनाव आने वाले हैं, तो सोमनाथ मंदिर का अभियान शुरू हो गया। हमारे देश में हजारों पुराने मंदिर हैं, जो अपने स्वाभिमान की पुनर्बहाली के लिए संघ-भाजपा की राह ताक रहे हैं। हर रोज गली-कूचों में जमीन पर अवैध कब्जा करके और उसे हड़पने के लिए कहीं राम के नाम पर, तो कहीं शिव के नाम पर, कही अलाने भगवान के नाम पर, तो कहीं फलाने भगवान के नाम पर मंदिर निर्माण अभियान चल रहा है। संघ-भाजपा के लिए यही राष्ट्र निर्माण अभियान है। जितने ज्यादा अवैध मंदिर बनेंगे, उतना ही ज्यादा हमारे देश का सांस्कृतिक गौरवोत्थान होगा।

2047 के विकसित भारत की ओर हमारे कदम इसी तरह बढ़ेंगे। हम अपने वेदों से खोज-खोजकर गोबर से, आलू से सोना बनाने की विधियां निकालेंगे और अमेरिका टैरिफ बढ़ा-बढ़ाकर इसे लूटने की योजना बनाएगा। अभी तो हम गोबर से सोना बनाने के काम में लगे हैं, तो अमेरिका का यह हाल है। कहीं हमें गोबर से हीरा बनाने की विधि हाथ में लग जाएं, तो ट्रंप साहब आज ही मोदीजी को हटाकर यहां स्वयं विराजमान हो जाएं! यही सोच-सोचकर हम कांप रहे हैं, अपने हाथ रोके हुए हैं। न सोना बना रहे हैं, न हीरा, बस भविष्य के लिए गोबर का ढेर लगाए जा रहे हैं। अपनी संप्रभुता की रक्षा भी कर रहे हैं और ट्रंप को ललकार भी रहे हैं कि अब लगाओ, कितना टैरिफ लगाते हो हमारे गोबर के ढेर पर। जबलपुर में तो इस सरकार ने साढ़े तीन करोड़ रुपयों पर ही गोबर लीप दिया है और लिपाई करने वालों के घर सोने से भर गए हैं। इस गोबर की सुगंध से ट्रंप का सिर भन्नाया हुआ है। उनके पूरे कस-बल, वेनेज़ुएला में आजमाए उनके विनाशक हथियार ढीले पड़े हुए हैं। ट्रंप अब राष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने की सोच रहे हैं, मोदीजी को फोन-पर-फोन करके दनादन माफी मांग रहे है। आधुनिक युग में इसे विदेश नीति और प्रतिरक्षा क्षेत्र में गोबर के महत्वपूर्ण योगदान के रूप में छात्रों को पढ़ाया जा सकता है।

तो बात मंदिर की चल रही है। राम मंदिर अभियान तो 35 सालों तक चला है। इतिहास की पुस्तकें उठाकर देख लीजिए, मुस्लिमों ने अतीत में हमारे मंदिर तो लूट लिए, इन मंदिरों पर अपनी मस्जिदें भी खड़ी कर लीं, लेकिन यह सब अतीत का हिस्सा है। मंदिरों को लूटा जा रहा था, और हमारे धर्म रक्षक ब्राह्मण पंडे जनता को लूट रहे थे, उन्हें मंदिरों अपने को बचाने की फुर्सत कहां थी? कुछ फुर्सत मिली भी, तो बौद्धों को कुचलने में लगा दी थी। लेकिन यह अतीत की बात है। आधुनिक इतिहास में अब संघ-भाजपा के इतने लंबे समय तक चले मंदिर निर्माण के राजनैतिक अभियान को पढ़ाया जाएगा, जो पूरे विश्व का अनूठा अभियान है। इस अभियान की विशेषता है कि यह शुरू तो होता है, लेकिन कहीं जाकर खत्म नहीं होता। इस अभियान के सहारे कहीं भी, कभी भी सांस्कृतिक आत्मसम्मान जगाया जा सकता है। सोते हुए हिंदुओं को जगाया जा सकता है और जागृत हिंदुओं को सुलाया जा सकता है। जो सोना न चाहे, उन्हें दफनाने का इंतजाम भी किया जा सकता हैं। इस सम्मान के लिए आधे-अधूरे बने राम मंदिर का मोदीजी उदघाटन भी कर सकते हैं और एक साल बाद उस पर चढ़कर घंटा भी बजा सकते हैं। मोदीजी मंदिर पर चढ़कर घंटा बजा रहे हैं और नीचे जनता मंदिर-विरोधी विपक्ष की घंटियां बजा रही है। आह, क्या अदभुत नजारा है! राजनीति में ऐसा नजारा भारत के सिवा और कहीं देखने को मिलेगा? यह भारत की धर्म-प्राण जनता का सर्वोत्कृष्ट है, जो मोदीजी के बिना संभव नहीं था। प्राइम मिनिस्टर इन डबल वेटिंग लालकृष्ण आडवाणी भी यह नहीं कर पाए और सत्ता के शिखर पर पहुंचने में नाकामयाब हो गए।

तो मित्रों, मंदिर-मंदिर का खेल फुल स्पीड में चालू है। इसमें कुत्तों ने भी एंट्री ले ली है। अब खबरदार, जो कुत्ते का नाम राम रखा तो!

(व्यंग्य-लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

दुखी पिता की दर्द भरी दास्तां

सड़क दुघर्टना में अपनी प्यारी बेटी प्रेरणा को खोने के बाद मध्य प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री श्री बाला बच्चन ने जो लिखा है। उसे पढ़ने के बाद मेरी आंखों से तो आंसू निकल गए।
शब्दों की अभिव्यक्ति को आपके लिए यहां प्रेषित कर रहा हूं

मेरी बेटी... (जहाँ अब सिर्फ़ तेरी यादें साँस लेती हैं)
बेटी,
तू आई थी तो मेरी दुनिया में पहली बार असली रोशनी आई थी।
तेरी पहली मुस्कान ने मुझे सिखाया था कि खुशी क्या होती है।
तेरी छोटी उंगलियाँ मेरी उंगलियों में फँस जाती थीं, और मैं सोचता था —
ये छोटे हाथ कभी बड़े होकर भी मेरा हाथ नहीं छोड़ेंगे।
पर किस्मत ने कुछ और ही लिखा।
तू चली गई, और मेरे हाथ खाली रह गए।

अब हर कमरे में तेरी हँसी की गूँज है, पर वो गूँज अब सिर्फ़ दर्द बनकर सीने में चुभती है।
तेरी वो नन्ही शरारतें, तेरी वो बातें — ₹पापा, मैं बड़ी होकर तुम्हारे जैसी बनूँगी₹ —
सब यादों की तस्वीरें बन गई हैं, जो हर पल आँखों में नम कर देती हैं।
मैंने सोचा था, मैं तुझे दुनिया से बचाऊँगा, हर तूफ़ान से पहले साया बनकर खड़ा रहूँगा।
पर तूफ़ान ने मुझे ही छोड़ दिया, और तुझे ले गया।
आज मैं बस इतना कहना चाहता हूँ...
तू जहाँ भी है, मेरी दुआएँ तेरे साथ हैं।
अगर भगवान मुझे एक बार फिर मौका दे, तो मैं फिर तुझे बेटी बनाकर माँगूँगा।
क्योंकि तू मेरी सबसे अनमोल, सबसे प्यारी, सबसे अधूरी कहानी थी।
तेरी कमी कभी पूरी नहीं होगी, बेटी।
पर तेरी यादें मुझे जीने की वजह देती हैं।
तू हमेशा मेरे दिल में, मेरी साँसों में, मेरी हर दुआ में रहेगी।
तेरा पापा... हमेशा तेरे लिए अधूरा, हमेशा तुझसे भरा हुआ।
.... पिता की कलम से

रिपोर्टिंग स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर द्वारा

जिन्दगी का हिसाब...!

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
कोई भी नया मिलें तो मुलाकात करते हैं,
यूं कोई बिछड़ गया उसको याद करते हैं!
ए जिन्दगी तुझसे हम कोई बात करते हैं।

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
कोई हमसे रूठा हैं उसकी बात करते हैं,
जो हमसे बिछड़ गया शिकायत करते हैं!
ईश्वर उसे मिला दे हम फ़रियाद करते हैं।

आईए जिन्दगी का कुछ हिसाब करते हैं,
पल-पल बीत गया उसकी बात करते हैं।
धैर्य-हौसला-साहस एवं हिम्मत की हमने,
जाने कैसे संघर्षों से जिंदगी जी हैं हमने!
दुनिया में नफरतों से भी प्रेरणा ली हमने।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

जिलाभर में 36 हजार से अधिक किसानों ने बनवाए फार्मर आईडी : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 14 जनवरी। किसानों के हित में सरकार की महत्वाकांक्षी एग्री स्टैक फार्मर आईडी योजना के अंतर्गत किसानों की फार्मर आईडी जेनरेट कराने में झज्जर जिला में प्रदेश के अग्रणी जिलों में शामिल हो गया है। जिलाभर में अभी तक 36 हजार से अधिक किसानों ने अपनी फार्मर आईडी बनवा ली है। उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने संबंधित विभागों, फील्ड टीमों एवं तकनीकी स्टाफ को हो हर किसान की फार्मर आईडी बनाने के निर्देश दिए हुए हैं ताकि पीएम किसान सम्मान निधि सहित कृषि आधारित अन्य अनुदान योजनाओं का लाभ सभी किसानों को मिल सके।

डीसी ने कहा कि एग्री स्टैक फार्मर आईडी किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण डिजिटल पहचान है, जिसके माध्यम से उन्हें सरकारी योजनाओं, सब्सिडी, फसल बीमा, ऋण, मुआवजा तथा अन्य लाभों का सीधा और पारदर्शी लाभ मिल सकेगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले के सभी पात्र किसानों की फार्मर आईडी तय समय-सीमा के भीतर शत-प्रतिशत पूर्ण की जाए।

डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा गांव-गांव जाकर विशेष अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत किसानों को जागरूक करने के साथ-साथ मौके पर ही फार्मर आईडी जेनरेट की जा रही हैं। विभिन्न विभागों के समन्वय, पंचायत स्तर पर सहयोग और तकनीकी टीमों की मेहनत के कारण आईडी बनाने की दिशा में सजगता से कार्य हो रहा है। जिला प्रशासन द्वारा प्रतिदिन आईडी बनाने संबंधी कार्यों की मॉनिटरिंग की जा रही है।

उन्होंने अधिकारियों का आह्वान किया कि जिला में कोई भी किसान बिना फार्मर आईडी के ना रहे और जिन किसानों की आईडी अभी शेष है, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर कवर किया जाए। चूंकि भविष्य में योजनाओं का लाभ फार्मर आईडी से ही मिलेगा।

उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे अपनी फार्मर आईडी स्वयं बनवाने के साथ साथ दूसरे किसानों की आईडी बनवाने में टीमों का सहयोग करें। किसान जरूरी दस्तावेज समय पर उपलब्ध कराएं। बुधवार को भी विभिन्न टीमों द्वारा गांवों में कैम्प लगाकर आईडी बनाने के साथ साथ किसानों को जागरूक किया।

जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में आज लगेंगे समाधान शिविर

झज्जर, 14 जनवरी। जिले में आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से वीरवार, 15 जनवरी को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित होंगे। ये शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक संचालित होंगे, जिनमें नागरिकों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान सुनिश्चित किया जाएगा। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिला की राजस्व सीमा में निकल रही हाई टेंशन लाईन का मुआवजा पावर ग्रिड द्वारा दिया जा रहा है। किसी भी किसान को कोई मुआवजा संबंधित शिकायत होने पर जिला स्तरीय समाधान शिविर में अपनी शिकायत दें तत्काल समाधान कराया जाएगा। जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर के कॉन्फ्रेंस कक्ष में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल करेंगे। उपायुक्त शिविर में नागरिकों की विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनेंगे तथा संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे।

उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में आयोजित होंगे। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच (आईएएस), बेरी में एसडीएम अंकित कुमार चौकसे (आईएएस) और बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में शिविर लगेंगे, जहां प्राप्त शिकायतों का तत्काल व प्रभावी निस्तारण किया जाएगा।

उपायुक्त ने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का सशक्त मंच हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर प्रत्येक सप्ताह सोमवार एवं गुरुवार को नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, ताकि विभिन्न विभागों के अधिकारी एक ही स्थान पर उपस्थित रहकर आमजन की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कर सकें।

अनुसूचित जाति के किसानों को ट्रैक्टर खरीद पर 3 लाख रुपये अनुदान,15 जनवरी तक आवेदन करें पात्र किसान

झज्जर, 14 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि कृषि विभाग द्वारा जिले के अनुसूचित जाति के किसानों को कृषि यंत्रीकरण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नए ट्रैक्टर की खरीद पर अनुदान प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कृषि निदेशालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार जिले के पात्र अनुसूचित जाति के किसानों को 45 हॉर्स पावर से अधिक क्षमता वाले नए ट्रैक्टर की खरीद पर एसबी-89 योजना के अंतर्गत 3 लाख रुपये का अनुदान दिया जाएगा।

उपायुक्त ने बताया कि इस योजना का लाभ लेने के इच्छुक किसान 15 जनवरी, 2026 तक कृषि विभाग के पोर्टल 222.ड्डद्दह्म्द्धड्डह्म्4ड्डठ्ठड्ड.द्दश1.द्बठ्ठ पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त आवेदनों पर किसी भी स्तर पर विचार नहीं किया जाएगा।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिले के पात्र अनुसूचित जाति के किसानों से आह्वान किया कि वे इस जनकल्याणकारी योजना का अधिकतम लाभ उठाते हुए समय रहते ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया पूर्ण करना सुनिश्चित करें।

दुल्हेड़ा गांव में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम 19 जनवरी को

बहादुरगढ़ (झज्जर), 14 जनवरी। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की अनूठी पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन इस बार 19 जनवरी को बहादुरगढ़ खंड के गांव दुल्हेड़ा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में किया जाएगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल करेंगे। डीसी ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे और उनका मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करेंगे। यह जानकारी बहादुरगढ़ के एसडीएम आईएएस अभिनव सिवाच ने दी।

एसडीएम ने बताया कि इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हेतु स्टॉल लगाए जाएंगे तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर पर जनता से सीधे जोडऩे और उनकी समस्याओं का त्वरित निवारण करना है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से प्रशासन को जमीनी हकीकत समझने और योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन की स्थिति जानने में मदद मिलती है।

उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं, अपनी समस्याएं और सुझाव प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

लुहारी और कुलाना गांव में अवैध कॉलोनी काटने के मामले में जिला प्रशासन ने की कार्रवाई

झज्जर, 14 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि लुहारी व कुलाना गांव में बगैर लाइसेंस व तय प्रक्रिया पूरी किए अवैध कॉलोनी काटे जाने के मामले में गंभीरता से संज्ञान लेते हुए कार्रवाई की है। उन्होंने बताया कि गांव लुहारी के किला नंबर 99//2,3, 43//21/2/2 और कुलाना में किला नंबर 42//6/2, 15/1 में भू-माफियाओं द्वारा सडक़ें बनाकर और नक्शा दिखाकर अवैध कॉलोनी का विज्ञापन करने पर उक्त खसरा नंबरों से जुड़े किसी भी प्रकार के सेल-डीड, एग्रीमेंट टू सेल, पावर ऑफ अटॉर्नी या फुल पेमेंट एग्रीमेंट को रजिस्टर्ड/एग्जीक्यूट करना प्रतिबंधित कर दिया है। डीटीपी कार्यालय के अनुसार उक्त मामले में न तो विभाग से कोई लाइसेंस, सीएलयू और न ही एनओसी प्राप्त की गई है।

डीटीपी कार्यालय द्वारा जारी पत्र के अनुसार बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता को उक्त अवैध कॉलोनी में किसी भी प्रकार का बिजली कनेक्शन जारी न करने के निर्देश दिए गए हैं। वहीं, हरियाणा स्टेट एन्फोर्समेंट ब्यूरो के थाना प्रभारी को उक्त साइट पर सख्त निगरानी रखने और किसी भी प्रकार के निर्माण या सडक़ नेटवर्क विकसित न होने देने को कहा गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और आमजन से अपील की है कि वे भू-माफियाओं से बचें। केवल सरकार द्वारा वैध एवं स्वीकृत कॉलोनियों में ही अपना मकान बनाने के लिए प्लाट खरीद सकते हैं। डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन अवैध कॉलोनियों को गिराने के लिए निरंतर अभियान चला रहा है।

मीडिया साक्षरता का महत्त्व

● डॉ विजय गर्ग

व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है। सूचना सचेत लोगों के बिना एक सचेत समाज का निर्माण संभव नहीं है। देश को यह यथार्थ तत्काल याद दिलाने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि पहली बार उत्तर प्रदेश और राजस्थान ने स्कूलों में समाचार पत्र पढ़ना अनिवार्य किया है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश ने इसी तरह का कदम उठाया था।

देश में उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान में भी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र का पाठन अनिवार्य किया गया है। यह पहल निस्संदेह सराहनीय है और अन्य राज्यों को भी इसे अपनाना चाहिए। मगर केवल अक्षर ज्ञान से बच्चे अखबार में प्रकाशित सामग्री को नहीं समझ पाते; समाचार और विचार का जीवन में अर्थ समझने के लिए मीडिया साक्षरता आवश्यक है। आज दुनिया के कई हिस्सों में मीडिया साक्षरता को गणित की तरह गंभीर विषय के रूप में पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है, जबकि भारत का शैक्षिक चिंतन अभी इससे काफी दूर है। अखबार पठन की इस अच्छी शुरुआत के साथ अगर स्कूलों में मीडिया साक्षरता भी जरूरी की जाए, तभी यह पहल अपने उद्देश्य को सार्थक कर पाएगी।

पढ़ना-लिखना जानने वाला

व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है। सूचना सचेत लोगों के बिना एक सचेत समाज का निर्माण संभव नहीं है। देश को यह यथार्थ तत्काल याद

दिलाने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि पहली बार उत्तर प्रदेश और राजस्थान ने स्कूलों में समाचार पत्र पढ़ना अनिवार्य किया है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश ने इसी तरह का कदम उठाया था।

वास्तविक लाभ

इस पहल की सराहना के साथ यह स्मरण करना भी जरूरी है कि भारत में मीडिया साक्षरता के अभाव में बच्चे समाचार पत्र को सही तरीके से पढ़ नहीं पाएंगे। दूसरे शब्दों में कहें, तो वे इसका वास्तविक लाभ नहीं ले पाएंगे। पाठ्यक्रमों में जितना महत्त्व गणित पढ़ाने को दिया जाता है, उतना ही महत्त्व मीडिया साक्षरता को देने पर ही सूचना सचेत समाज का सही अर्थों में निर्माण हो पाएगा। विकसित देशों में तो शिक्षकों से ज्यादा पुस्तकालय लोगों को मीडिया एवं सूचना

साक्षर बनाने में योगदान देते हैं। अमेरिकन प्रेजिडेंशियल पुस्तकालय ने तो विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पूरा ढांचा तैयार करके दिया है कि समाचार को व्यवस्थित तरीके से कैसे पढ़ें और उसके लाभ-हानियों को कैसे समझें। विकासशील देशों, यहां तक कि भूटान जैसे छोटे राष्ट्र में भी मीडिया साक्षरता के महत्त्व को स्वीकारा जा रहा है।

परंपरा के अनुरूप

स्कूलों में समाचार पत्र के पाठन को अनिवार्य करने की पहल से उम्मीद जगी है कि मीडिया साक्षरता की दिशा में भी समय रहते प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। चूंकि इस क्षेत्र में भारत पहले ही काफी पीछे है, इसलिए वैश्विक पाठ्यक्रमों को ज्यों का त्यों अपनाना संभव नहीं। हमें देश के सामाजिक अनुभव और बौद्धिक परंपरा के अनुरूप अपना पाठ्यक्रम विकसित करना होगा। साथ ही यह स्मरण रखना जरूरी है कि यह वही भारत है, जिसके पास सूचना और मीडिया साक्षरता की शिक्षण परंपरा हजारों

वर्ष पुरानी है। वेदों के प्रादुर्भाव के तुरंत बाद ही मीमांसा और न्याय जैसे ग्रंथों के माध्यम से सूचना के विश्लेषण एवं तर्क की सशक्त विधियां विकसित की गई। मीडिया और सूचना साक्षरता सिखाने के लिए भारत के पास ज्ञान की अतुल संपदा पहले से उपलब्ध है।

आधुनिक युग में तो इस विषय की शुरुआत कनाडा के ओंटारियो प्रांत ने वर्ष 1978 में की थी। शुरुआत के पीछे एक रोचक घटना है। कनाडा सरकार को लगा कि उसके युवा अमेरिका की संस्कृति के प्रभाव में रहते हैं। खोज करने पर पता चला कि यह अमेरिकी मीडिया के प्रभाव के कारण हो रहा है। विशेषज्ञों ने बताया कि वहां के लोग मीडिया साक्षर नहीं है, इसलिए ऐसा हुआ। इसके बाद शिक्षकों ने मिलकर इस विषय के लिए मजबूत पाठ्यक्रम बनाया और उसके परिणाम भी सकारात्मक रहे । युवा समझ पाए कि कैसे संदेशों को निष्क्रिय रूप से लेकर हम उनके साथ बिना सोचे बहे चले जाते हैं। उधर, यूनेस्को ने इस पर व्यापक कार्य शुरू कर दिया और पुस्तकालय विज्ञान के पहले से चल रहे सूचना साक्षरता को मीडिया साक्षरता के साथ जोड़कर सूचना सचेत समाज बनाने का खाका व्यापक कर दिया।

लोकतंत्र और समाचार माध्यम

मीडिया साक्षरता की जटिल तकनीकी अवधारणाओं में जाने से पहले कुछ मौलिक प्रश्नों को समझना अधिक आवश्यक है, क्योंकि यही मीडिया साक्षर बनने की प्रारंभिक सीढ़ियां हैं। यदि बच्चे या वयस्क को यह व्यवस्थित रूप से न बताया जाए कि एक नागरिक के लिए समाचार को सही ढंग से समझना क्यों जरूरी है, नागरिक के समाचार-बोध और लोकतंत्र के बीच क्या संबंध है, समाचार की वास्तविक संरचना क्या होती है, तो उससे सजग मीडिया प्रयोग करने की उम्मीद करना व्यर्थ है। डिजिटल माध्यमों के अनियंत्रित और अनजान स्रोतों ने तो अनेक पढ़े-लिखे लोगों को भी यह भुला दिया है कि असली समाचार कैसा होता है। इसके शिक्षण में बताया जाता है कि मीडिया काम कैसे करता है? संदेशों का निर्माण कैसे करता है? यह किस तरह संचालित होता है? समाचार व अन्य संदेशों का महत्त्व बताने के साथ उनकी सीमाएं भी बताई जाती है? फिर मीडिया संदेशों का विश्लेषण करने और उसमें पक्षपात छांटने की विधि बताई जाती है। डिजिटल तकनीक के विस्तार और उससे भ्रामक सूचनाओं दुनिया को डिजिटल साक्षरता को एक अलग शाखा बनाने पर मजबूर कर दिया। इन दिनों जब कृत्रिम मेधा का बोलबाला है, तो अब इस विषय में साक्षरता के लिए सहमति बनी है। ऐसा लगता है कि अब तो सारा ध्यान कृत्रिम मेधा साक्षरता पर ही न चला जाए। मगर इसका मूल आधार मीडिया साक्षरता से ही आएगा यानी यही विषय अब कृत्रिम मेधा के छिपे अर्थ समझने में मदद करेगा। प्रारंभिक स्तर पर सभी विषयों के शिक्षक बच्चों में समाचार के माध्यम से नागरिक बोध विकसित कर सकते हैं। इसके बाद मीडिया साक्षरता के विशेषज्ञों से पाठ्यक्रम तैयार कराकर स्कूलों में प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल

कृषि नवाचार में में पिछड़ती महिलाएं

डॉ विजय गर्ग

देश में खेती-बागवानी में महिलाओं की भूमिका अहम है। फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक और मौसम की आहट को समझने का महिलाओं का अनुभव, ये सब मिलकर भारतीय कृषि को आगे बढ़ाता है। मगर विडंबना यह है कि जब खेती के ज्ञान-विज्ञान और नीति की बात आती है, तब महिला की मौजूदगी कमजोर पड़ जाती है। खेत में सबसे अधिक श्रम देने वाली महिला, कृषि विज्ञान और निर्णय प्रक्रिया है। । यही भारतीय कृषि की सबसे गहरी और में हाशिये पर चली जाती कषि कार्यबल का बड़ा हिस्सा महिलाओं अनदेखी असमानता है। । देश में का है। ग्रामीण भारत में अधिकांश महिलाएं किसी न किसी रूप में खेती से जुड़ी हैं। वे फसल बोती हैं, उनकी देखरेख करती है, फसल काटती हैं, संभालती है, बीज सहेजती हैं, अनाज सुखाती हैं और खाद्य प्रसंस्करण करती हैं। इसके बावजूद उनका योगदान सिर्फ श्रम के खाते में दर्ज होता है, ज्ञान के खाते में नहीं। कृषि ऋण, बीमा, तकनीक और बाजार तक भी महिलाओं की पहुंच [रहती है। । कृषि से जड़े फैसले में लिए जाते हैं। यही कारण है कि कपड़े फैसले अब भी पुरुष प्रधान ढांचों है कि कृषि विज्ञान, शोध और नवाचार के क्षेत्र अपेक्षा से बहुत कम सीमित में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षा से ।

आश्वस्त

कम दिखाई देता ह कृषि विश्वविद्यालयों में नामांकन के आंकड़े पहली नजर में करते हैं। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर स्तर पर छात्राओं की संख्या लगभग बराबरी पर पहुंच चुकी है। मगर यह समानता सतही है। डिग्री हासिल करने के बाद शोध संस्थानों, विस्तार सेवाओं, कृषि प्रौद्योगिकी कंपनियों और नीति निर्माण से जुड़े मंचों पर महिलाओं की उपस्थिति तेजी से घट जाती है। कई बार पारिवारिक जिम्मेदारियां, आर्थिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाएं उनके रास्ते रोक लेती है। 5 लेती हैं। नतीजा यह होता 1 यह होता है कि खेत में काम करने वाली महिलाओ की वास्तविक जरूरतें शोध का हिस्सा नहीं बन पातीं। उनके शरीर के अनुकूल औजार, उनके समय को समय को समझने वाली तकनीक और उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखने में रखने वाले नवाचार विकसित नहीं हो पाते। इतना ही नहीं, ग्रामीण महिला किसान का जीवन केवल खेत तक सीमित नहीं रहता। पानी भरना, ईंधन जुटाना, भोजन पकाना, बच्चों और बुजुगों की देखभाल, पशुओं की जिम्मेदारी इन सबका भार उनकी दिनचर्या में जुड़ा रहता है। यह है। यह दोहरा बोझ उनक उनके सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों को सीमित कर कर देता है। लगातार की दर्द मुद्रा में काम करने से होने वाले स्वास्थ्य प्रभाव, थकान और समय की कमी को कृषि नीति तथा विज्ञान क बहसों में अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। ऐसे में जब विज्ञान जीवन से कट जाता है, तब उसका लाभ भी सीमित रह जाता है। ग्रामीण महिलाओं के पास पारंपरिक कृषि ज्ञान की अपार संपदा है। मौसम के संकेत, मिट्टी की प्रकृति, बीजों की गुणवत्ता, फसलों की विविधता यह सब अनुभव से अर्जित विज्ञान है। यदि इस ज्ञान को औपचारिक शिक्षा और आधुनिक शोध से जोड़ा जाए, तो कृषि नवाचार अधिक व्यावहारिक, मानवीय और टिकाऊ बन सकता है। इसलिए कृषि विज्ञान में महिलाओं की भागीदारी किसी सामाजिक संवेदना का प्रश्न नहीं, बल्कि कृषि की गुणवत्ता और भविष्य से जुड़ा रणनीतिक मुद्दा है। कर्नाटक के कोलार की एक युवती इसका सशक्त उदाहरण है। छोटे किसान परिवार से ताल्लुक रखने।

वाली इस युवती ने फसल की कटाई के बाद होने वाले नुकसान को खेत में खड़े होकर महसूस किया। वही अनुभव उनके शोध की दिशा बना। अब वह आम उत्पादकों के लिए ऐसी तकनीक पर काम कर रही हैं, जिससे फसल नुकसान कम हो और आय बढ़े यह शोध प्रयोगशाला की कल्पना नहीं, बल्कि

1

खेत की वास्तविक जरूरत से निकला समाधान है। ऐसे ही देश भर में और भी कई युवतियां शोध तथा खेत के बीच की दूरी कम करने के लिए प्रयासरत हैं।

स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के बाद कई युवतियां कृषि में शोध और नवाचार के कार्यों से जुड़ना चाहती हैं, लेकिन आर्थिक और सामाजिक बाधाएं उनका रास्ता रोक देती हैं। सीमित आय के कारण उच्च शिक्षा उनके लिए दूर का सपना बन जाती है। प्रवेश शुल्क, छात्रावास और पाठ्यक्रम से जुड़ी लागत उनके सामने बड़ी बाधा बन जाती है। फसल विविधता और सतत खेती के माध्यम से ग्रामीण जीवन को अधिक सुरक्षित एवं टिकाऊ बनाने के लिए खेती में महिलाओं के अनुभव को शोध एवं नवाचार से जोड़े जाना बेहद जरूरी है। कोटेंवा एग्रीसाइंस, दक्षिण एशिया के अध्यक्ष सुव्रत गीड के ड के अनुसार, भारत में में किसान परिवारों की अनेक बेटियों को उच्च शिक्षा इसलिए छोड़नी पड़ती है, क्योंकि शुल्क, छात्रावास और पुस्तकों का खर्च उनकी आर्थिक क्षमता से बाहर होते हैं।

ऐसे में मेघा- -आधारित छात्रवृत्तियों का विस्तार, महिला विद्यार्थियों के लिए अवसर बढ़ाना और समुदाय आधारित प्रशिक्षण को शिक्षा से जोड़ना इस प्रतिभा श्रृंखला को बनाए रखने में मदद करता है जब कृषि में काम करने वाली महिलाओं को ज्ञान, कौशल और अवसर मिलते हैं, तब उसका लाभ कुछ लोगों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा कृषि समुदाय मजबूत होता है। यानी सही समय पर मिला सहयोग प्रतिभा को टूटने से बचा सकता है। इसी संदर्भ में में कृषि क्षेत्र क्षेत्र में महिलाओं के लिए चलाए जा रहे छात्रवृत्ति कार्यक्रमों का महत्त्व समझा जाना चाहिए। इनका उद्देश्य केवल शुल्क भ भरना नहीं, बल्कि छात्राओं को अवसर देना, शोध और नवाचार में उनकी निरंतर उपस्थिति सुनिश्चित करना तथा कृषि- - 1-विज्ञान में उनका नेतृत्व विकसित करना है।

ऐसी पहल यह संदेश देती हैं कि ग्रामीण पृष्ठभूमि की बेटियां भी प्रयोगशालाओं, शोध संस्थानों और नीति मंचों तक पहुंच सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र की ओर से वर्ष 2026 को 'अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष' घोषित किया जाना इसी दिशा में वैश्विक स्वीकारोक्ति है इस घोषणा से पता चलता है कि महिलाएं केवल कृषि की लाभार्थी नहीं हैं, बल्कि खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण समृद्धि और जलवायु अनुकूलन की वाहक भी हैं। भारत में पुरुषों के शहरा का ओर बढ़ते पलायन से खेती की जिम्मेदारी तेजी से महिलाओं पर आ रही पर इस जिम्मेदारी के साथ उन्हें अधिकार और संसाधन नहीं मिल पाए हैं। यही असंतुलन भविष्य के लिए चुनौती बनता जा रहा है। हालांकि, सरकारी स्तर पर कई तरह की पहल शुरू की गई हैं, जिनमें महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना, कृषि मशीनीकरण से जुड़ी योजनाएं स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा और ग्रामीण महिला उद्यमिता कार्यक्रम शामिल हैं। ये कार्यक्रम दिशा तो दिखाते हैं, पर इनका असर तभी होगा, जब शिक्षा और नेतृत्व को केंद्र में रखा रखा जाएगा

जलवायु परिवर्तन ने कृषि की चुनौतियों को और भी गंभीर बना दिया है। सूखा, बाढ़ और अनिश्चित मौसम का सबसे गहरा असर महिला किसानों पर पड़ता है। इसलिए जलवायु अनुकूल खेती, फसल विविधता और बाजार से सीधा जुड़ाव उनके लिए विकल्प नहीं, आवश्यकता बन चुके हैं। किसान दिवस जैसे अवसर केवल औपचारिक आयोजन तक सीमित नहीं रहने चाहिए। कृषि में महिलाओं की शिक्षा पर किया गया निवेश पूरे ग्रामीण समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। जब खेत की मिट्टी से निकली बेटी प्रयोगशाला में खड़ी होती है, तब विज्ञान को असल जमीन मिलती है। यही जमीन देश की कृषि को अधिक संवेदनशील, टिकाऊ और सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा सकती है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल
मलोट पंजाब

"प्रोसेस्ड भोजन : सुविधाजनक ज़हर और भारत की मौन स्वास्थ्य आपातकाल

आपकी थाली बनाम प्रोसेस्ड फूड उद्योग : स्वास्थ्य की असली जंग कहाँ चल रही है?

अमेरिका की चेतावनी, भारत की तेज़ रफ्तार और हमारी थाली में छिपा 'धीमा ज़हर' – अब भी नहीं चेते तो अगला दशक अस्पतालों का होगा, घरों का नहीं

संजय कुमार बाठला

प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड, मोटापा, डायबिटीज़ और हृदय रोग जैसी क्रॉनिक बीमारियों के सबसे बड़े कारक बन चुके हैं।

अमेरिका में स्वास्थ्य-खर्च का लगभग 90% हिस्सा क्रॉनिक बीमारियों पर जा रहा है; भारत उसी राह पर और भी तेज़ी से बढ़ रहा है।

भारत में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड की खपत 13% सालाना की दर से बढ़ रही है, पैकेज्ड फूड पर प्रति व्यक्ति खर्च लगभग दोगुना हो चुका है।

वैज्ञानिक साक्ष्य साफ़ बताते हैं: आज की ज्यादातर क्रॉनिक बीमारियाँ उम्र की नहीं, बल्कि आधुनिक खाद्य व्यवस्था की देन हैं।

समाधान कोई रहस्य नहीं:

* "रियल फूड फर्स्ट" – कम प्रोसेस्ड, ज़्यादा प्राकृतिक भोजन,
* स्पष्ट लेबलिंग,
* टैक्स और विज्ञापन नियंत्रण।

आपका स्वास्थ्य ठीक रहे यह आप पर और आपकी भोजन की थाली पर निर्भर करता है, न कि बनावटी दिखावे पर।

आज की दुनिया में स्वास्थ्य का सबसे बड़ा निर्धारक आपके ब्लड टेस्ट से पहले आपकी प्लेट है – और प्लेट पर क्या है, यह हम से ज़्यादा खाद्य उद्योग तय कर रहा है।

प्रोसेस्ड फूड : आधुनिक सुविधा या नई महामारी का ईंधन? पिछले दो दशक में दुनिया भर में एक ख़तरनाक पैटर्न साफ़ नज़र आने लगा है। मोटापा, डायबिटीज़, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, फैटी लिवर, PCOD, कैंसर जैसे दीर्घकालिक (क्रॉनिक) रोग अचानक नहीं बढ़े; इनके पीछे एक साझा धागा है – प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन का विस्फोटक प्रसार।

ये वो खाद्य पदार्थ हैं जो

* फैक्ट्री से ज़्यादा आते हैं, खेत से कम।
* जो विज्ञापन में "टेस्टी", "इंस्टेंट", "एनर्जी से भरपूर", "किड्स फेवरेट" बनकर आते हैं, पर भीतर से होते हैं:अत्यधिक रिफाइंड शुगर से लदे हुए
* अस्वस्थ वसा और इंडस्ट्रियल ट्रांस फैट से भरे
* नमक (सोडियम) की खतरनाक मात्रा वाले
* फाइबर, प्राकृतिक प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्वों से लगभग खाली
* कृत्रिम फ्लेवर, कलर, प्रिज़र्वेटिव्स और एडिटिव्स का कॉकटेल

दुनिया की सबसे विकसित मानी जाने वाली अर्थव्यवस्था, अमेरिका, अब यह बात खुले तौर पर मानने के लिए मजबूर हो गया है कि उसकी स्वास्थ्य-व्यवस्था का पतन, उसकी थाली से शुरू हुआ।

अमेरिका में बज चुकी खतरे की घंटी – और उससे मिलने वाला सबक अमेरिका की हालिया राष्ट्रीय आहार नीति रिपोर्ट के अनुसार:

* वहाँ स्वास्थ्य-सेवा पर होने वाले कुल खर्च का लगभग 90% हिस्सा क्रॉनिक बीमारियों पर जा रहा है।
* 75% वयस्क या तो मोटापे के शिकार हैं या ओवरवेट हैं।
* 50% से अधिक वयस्क डायबिटीज़ या प्री-डायबिटीज़ की स्थिति में हैं।
* लगभग हर तीसरा किशोर पहले से ही प्री-डायबिटिक है।
* इन आँकड़ों ने सैन्य भर्ती तक को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। खानपान से जुड़ी बीमारियाँ युवाओं को सेना और अन्य आवश्यक सेवाओं के लिए अयोग्य बना रही हैं। यह केवल स्वास्थ्य नहीं, राष्ट्रीय सुरक्षा और अर्थव्यवस्था का भी संकट है।

इसी गंभीर स्थिति को देखते हुए अमेरिकी सरकार ने अपनी डाइट गाइडलाइंस में निर्णायक बदलाव किए हैं:

* प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन से दूरी बनाने की अपील
* प्राकृतिक, ताज़ा और न्यूनतम रूप से प्रोसेस्ड भोजन को बढ़ावा
* थाली में प्रोटीन, सब्ज़ियाँ, फल, साबुत अनाज और डेयरी उत्पादों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर ज़ोर

यह अब "लाइफस्टाइलटिप" नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल की आधिकारिक प्रतिक्रिया है।

सवाल यह है: क्या भारत इस चेतावनी को सुन रहा है या हम वही गलती कई गुना तेज़ी से दोहरा रहे हैं?

भारत का रुख – पश्चिम की गलती, पूर्व की रफ्तार

भारत की तस्वीर पहले से ही चिंताजनक है:

1. लगभग 29% भारतीय अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं।
2. 11% आबादी डायबिटीज़ से जूझ रही है;
3. 15% प्री-डायबिटिक अवस्था में हैं।
4. 3.4% बच्चे मोटापे का शिकार हैं – यानी बीमारी की शुरुआत बचपन से।

उधर, मार्केट के आँकड़े बताते हैं कि:

1. भारत में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन की खपत लगभग 13% प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है।
2. पैकेज्ड फूड पर प्रति व्यक्ति खर्च पिछले दशक में लगभग दोगुना हो चुका है।
3. इंस्टेंट नूडल्स, चिप्स, चॉकलेटेड सीरियल, मीठे पेय, पैकेज्ड जूस, बिस्कुट, बर्गर-पिज़्ज़ा और बेकरी उत्पाद धीरे-धीरे घर के पारंपरिक, ताज़े पकवान की जगह ले रहे हैं।
4. एक तरफ़ हमारे गाँव और कस्बों तक "फास्ट फूड कॉर्नर" और "टेक अवे" पहुँच चुके हैं, दूसरी तरफ़ थाली से दाल, मोटा अनाज, मौसमी सब्ज़ियाँ, घरेलू छाछ और लस्सी गायब हो रही हैं।
5. सुविधा, स्वाद और विज्ञापन की चकाचौंध ने हमारे खाद्य-संस्कार पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया है।

विज्ञान क्या कहता है: समस्या सिर्फ मोटापे की नहीं, पूरे मेटाबॉलिज़्म की है

आधुनिक वैज्ञानिक शोध स्पष्ट कर चुके हैं कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन शरीर को केवल "मोटा" नहीं करता, बल्कि भीतर से "बीमार" बनाता है:

1. ये हमारे आंतों के माइक्रोबायोम (गट बैक्टीरिया) को बिगाड़ते हैं, जिससे पूरे शरीर में लो-ग्रेड क्रॉनिक इंफ्लेमेशन (दीर्घकालिक सूजन) बनी रहती है।
2. ये इंसुलिन रेज़िस्टेंस पैदा करते हैं; यानी शरीर की कोशिकाएँ इंसुलिन की बात सुनना बंद कर देती हैं, जिसके पहले संकेत के रूप में पेट के आसपास की खतरनाक चर्बी (विसरल फैट) बढ़ती है।
3. यह भोजन भूख और मेटाबॉलिज़्म को नियंत्रित करने वाले हार्मोन्स (जैसे लेप्टिन, घ्रेलिन) को गड़बड़ा देता है – न भूख सही से लगती है, न पेट सही से भरने का संकेत मिलता है।
4. शोध यह भी दिखा रहे हैं कि, केवल कैलोरी गिनने के बावजूद, जितना ज्यादा अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन, उतना ज्यादा हृदय रोग और स्ट्रोक का जोखिम।
5. महत्वपूर्ण बात यह कि रोज़ाना जिम जाने या पैदल चलने वाला व्यक्ति भी, यदि उसकी थाली में ज़्यादातर प्रोसेस्ड फूड है, तो वह ख़ुद को पूरी तरह सुरक्षित नहीं मान सकता। व्यायाम ज़रूरी है, लेकिन वह खराब आहार के गहरे नुकसान को पूरी तरह रद्द नहीं कर सकता।

वैश्विक सोच में बदलाव: "रियल फूड फर्स्ट" दुनिया भर की नई आहार नीतियाँ अब एक सरल, लेकिन क्रांतिकारी संदेश पर सहमत हो रही हैं:

"रियल फूड फर्स्ट" – असली, संपूर्ण, कम से कम प्रोसेस्ड भोजन को प्राथमिकता।

इसके पाँच मुख्य स्तंभ उभर कर आए हैं:

1. पर्याप्त प्रोटीन – अंडे, दूध, दही, दालें, राजमा, चने, मछली, मांस, पनीर, नट्स और बीज जैसे स्रोतों को रोज़ाना की थाली में शामिल करना।
2. पैकेज्ड के बजाय संपूर्ण भोजन – जो अपने प्राकृतिक रूप के ज़्यादा करीब हो; जैसे साबुत अनाज, दाल-सब्ज़ी, फल, घर का पका भोजन।
3. कम शक्कर, कम रिफाइंड आटा – मीठे पेय, ठंडी बोतलें, पैकेट वाले जूस, कुकीज़, केक, सफेद ब्रेड, रिफाइंड मैदे के प्रयोग को सीमित करना।
4. प्राकृतिक वसा, सीमित मात्रा में – घी, सरसों का तेल, मूँगफली/तिल का तेल जैसे पारंपरिक वसा को संतुलित मात्रा में; इंडस्ट्रियल ट्रांस फैट और बार-बार गर्म किए गए तेल से दूरी।
5. स्पष्ट फूड लेबलिंग – पैकेट पर शक्कर, नमक, फैट की चेतावनी को स्पष्ट, समझने योग्य और ईमानदार बनाना।

कई देश अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड और मीठे पेय पर टैक्स लगा रहे हैं, बच्चों को लक्षित विज्ञापनों पर पाबंदी पर विचार कर रहे हैं, और स्कूलों में ऐसे खाद्य पदार्थों की बिक्री पर नियंत्रण बढ़ा रहे हैं।

यह "व्यक्तिगत पसंद" का मसला भर नहीं रहा, यह सार्वजनिक नीति और सार्वजनिक स्वास्थ्य का मसला बन चुका है।

भारत के लिए नीति-संदेश: बीमारी के बाद नहीं, पहले रोकथाम भारत के लिए इस वैश्विक चेतावनी के तीन स्पष्ट निहितार्थ हैं:

1. प्रोसेस्ड फूड को सिर्फ सुविधा नहीं, जोखिम के रूप में देखना
2. प्रोसेस्ड भोजन अब महज़ टाइम-सेवर या टेस्ट एन्हांसर नहीं रहा; यह दीर्घकालिक बीमारियों का ईंधन है। इसे "धीमा ज़हर" कहना अतिशयोक्ति नहीं।
3. भोजन को राष्ट्रीय स्वास्थ्य का सबसे शक्तिशाली निर्धारक मानना

हम अस्पतालों, दवाइयों और बीमा पर जितना भी खर्च कर लें, यदि थाली नहीं बदली तो बीमारी का सिलसिला नहीं टूटेगा। सही पोषण से की गई रोकथाम, बीमारी के बाद के इलाज से सस्ती भी है और अधिक प्रभावी भी।

नीतिगत कदम – केवल लोगों को दोष देने से बात नहीं बनेगी

1. स्पष्ट, फ्रंट-ऑफ-पैक चेतावनी लेबल: हाई शुगर, हाई नमक, हाई फैट वाले उत्पादों पर लाल चेतावनी चिह्न।
2. बच्चों को लक्षित जंक फूड विज्ञापनों पर सख्त नियंत्रण।
3. स्कूलों, अस्पतालों और सरकारी संस्थानों में स्वस्थ भोजन की अनिवार्यता, जंक फूड पर प्रतिबंध।
4. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड और मीठे पेय पर टैक्स, और फल-सब्ज़ी, दाल, दूध जैसी बुनियादी चीज़ों को सस्ता करने की नीतियाँ।

यदि हम आज ये कदम नहीं उठाते, तो आने वाले वर्षों में हमारी स्वास्थ्य-व्यवस्था आर्थिक रूप से अस्थिर हो सकती है, युवा पीढ़ी "मेटाबॉलिक रूप से बूढ़ी" हो जाएगी और उत्पादकता के साथ जीवन की गुणवत्ता भी तेज़ी से गिरती जाएगी।

निष्कर्ष: अस्पताल से पहले थाली बदलिए अमेरिका की बदली हुई आहार नीति और भारत के संदर्भ में उभरती चेतावनियाँ किसी एक देश की नहीं, एक वैश्विक चेतना की अभिव्यक्ति हैं।

संदेश साफ़ है:

1. आज की क्रॉनिक बीमारियाँ सिर्फ उम्र की देन नहीं, आधुनिक खाद्य व्यवस्था की देन हैं।
2. प्रोसेस्ड फूड केवल समय बचाने वाली सुविधा नहीं, बल्कि शरीर को चुपचाप खोखला करने वाला धीमा ज़हर है।
3. हमारा स्वास्थ्य-भविष्य अस्पतालों, डायग्नोस्टिक सेंटरों और दवा कंपनियों में नहीं, सबसे पहले हमारी थाली में तय हो रहा है।

आख़िर में सवाल सीधा है, पर उत्तर बेहद निर्णायक –

1. क्या हम अपनी अगली पीढ़ी को अस्पतालों की लाइन में खड़ा देखना चाहते हैं, या खेत और रसोई को जोड़कर, थाली में असली भोजन वापस लाना चाहते हैं?

15 जनवरी: भारतीय सेना दिवस : राष्ट्र की सुरक्षा, संप्रभुता और आत्मसम्मान की अडिग प्रहरी

बाबूलाल नागा

भारत में प्रत्येक वर्ष 15 जनवरी को भारतीय सेना दिवस मनाया जाता है। यह दिवस भारतीय सेना के अद्वितीय शौर्य, अनुशासन, त्याग और राष्ट्र के प्रति उसकी अटूट निष्ठा को सम्मान देने का अवसर है। 15 जनवरी 1949 को स्वतंत्र भारत के पहले थल सेनाध्यक्ष जनरल के. एम. करियप्पा ने भारतीय सेना की कमान संभाली थी। उसी ऐतिहासिक क्षण की स्मृति में यह दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। सेना दिवस केवल सैन्य परंपरा का उत्सव नहीं बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा में समर्पित लाखों सैनिकों के योगदान का सार्वजनिक स्वीकार है।

भारतीय सेना देश की सीमाओं की रक्षा करने वाली सबसे विश्वसनीय और संगठित संस्थाओं में से एक है। उत्तर में हिमालय की बर्फीली चोटियों से लेकर पश्चिम के रेगिस्तानी क्षेत्रों और पूर्वोत्तर के दुर्गम पहाड़ी इलाकों तक, भारतीय सैनिक कठिनतम परिस्थितियों में तैनात रहते हैं। अत्यधिक ठंड, भीषण गर्मी, दुर्गम भौगोलिक स्थिति और निरंतर खतरे के बीच सैनिक पूरी सजगता और साहस के साथ राष्ट्र की रक्षा का दायित्व निभाते हैं। इन परिस्थितियों में भी उनका मनोबल और अनुशासन अनुकरणीय रहता है।

भारतीय सेना का आदर्श वाक्य "सेवा परमो धर्मः" उसके चरित्र और कार्य संस्कृति को परिभाषित करता है। सेना में सेवा केवल एक पेशा नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति समर्पण का जीवनभर का संकल्प है। सैनिक अपने परिवार, सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत सुखों को पीछे छोड़कर देश की सीमाओं पर तैनात रहते हैं ताकि देश का हर नागरिक सुरक्षित और निश्चित जीवन जी सके। सैनिकों का यह त्याग अक्सर मौन रहता है किंतु राष्ट्र की सुरक्षा में इसकी भूमिका अमूल्य है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय सेना ने अनेक युद्धों और सैन्य अभियानों में अपनी वीरता और रणनीतिक दक्षता का परिचय दिया है। वर्ष 1947-48 का युद्ध, 1962 का संघर्ष, 1965 और 1971 के युद्ध तथा 1999 का कारगिल युद्ध भारतीय सैन्य इतिहास के महत्वपूर्ण अध्याय हैं। विशेष रूप से 1971 के युद्ध में भारतीय सेना की निर्णायक विजय ने न केवल देश की सुरक्षा को सुदृढ़ किया, बल्कि दक्षिण एशिया में भारत की सामरिक स्थिति को भी मजबूत किया। कारगिल युद्ध में दुर्गम और ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में सैनिकों का पराक्रम आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

भारतीय सेना समय के साथ निरंतर आधुनिक होती रही है। आज सेना अत्याधुनिक हथियार प्रणालियों, आधुनिक निगरानी तकनीक, उन्नत संचार तंत्र और विशेष बलों की क्षमताओं से सुसज्जित है। बदलती वैश्विक परिस्थितियों और सुरक्षा चुनौतियों के अनुरूप सेना ने अपनी रणनीतियों और प्रशिक्षण प्रणालियों को भी सुदृढ़ किया है। इसके बावजूद, सेना की सबसे बड़ी शक्ति उसकी तकनीक नहीं बल्कि उसके सैनिकों का साहस, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता है।

भारतीय सेना की एक विशिष्ट विशेषता उसकी सामाजिक संरचना है। देश के विभिन्न राज्यों, भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों से आए सैनिक एकजुट होकर राष्ट्र की सेवा करते हैं। यह विविधता सेना को और अधिक सशक्त बनाती है तथा राष्ट्रीय एकता और अखंडता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती है। सेना का यह स्वरूप देश की लोकतांत्रिक

और समावेशी परंपराओं को भी प्रतिबिंबित करता है।

सीमाओं की सुरक्षा के साथ-साथ भारतीय सेना आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। भूकंप, बाढ़, चक्रवात, भूस्खलन और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सेना ने राहत एवं बचाव कार्यों में तत्परता दिखाई है। कठिन परिस्थितियों में फंसे नागरिकों को सुरक्षित निकालना, भोजन और चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना तथा पुनर्वास कार्यों में सहयोग करना सेना की मानवीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस भूमिका के कारण सेना को जनता का विशेष विश्वास और सम्मान प्राप्त है।

भारतीय सेना के हजारों जवानों ने राष्ट्र की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दी है। उनका बलिदान देश के लिए सर्वोच्च प्रेरणा है। सैनिकों के इस त्याग के कारण ही भारत की सीमाएं सुरक्षित हैं और देशवासी स्वतंत्र, शांतिपूर्ण और स्वाभिमानी जीवन जी पा रहे हैं। सेना के शहीदों का स्मरण केवल औपचारिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है।

सेना दिवस देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का दिन है। सेना का अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रभक्ति युवाओं को सेवा और समर्पण के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह दिवस नागरिकों को यह भी याद दिलाता है कि राष्ट्र की सुरक्षा केवल सीमाओं पर तैनात सैनिकों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है।

15 जनवरी का यह दिवस आत्मचिंतन का अवसर भी प्रदान करता है। यह हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि हम अपने सैनिकों के प्रति कृतज्ञता कैसे व्यक्त कर सकते हैं। सैनिकों का सम्मान केवल शब्दों या औपचारिक आयोजनों तक सीमित न रहकर, एक जिम्मेदार, जागरूक और राष्ट्रहित में सोचने वाले नागरिक बनने में निहित है।

अंततः, भारतीय सेना केवल एक सैन्य संगठन नहीं, बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा, संप्रभुता और आत्मसम्मान की अडिग प्रहरी है। उसका साहस देश को निर्भय बनाता है, उसका अनुशासन व्यवस्था को मजबूत करता है और उसका बलिदान भारत को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

माँ-बाप की नीयत, परवरिश और टूटते घर

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भारतीय समाज में माता-पिता को सर्वोच्च नैतिक स्थान प्राप्त है। उन्हें त्याग, तपस्या और निस्वार्थ प्रेम का प्रतीक माना जाता है। बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि माँ-बाप कभी गलत नहीं हो सकते। उनकी हर बात आदेश है, हर निर्णय अंतिम सत्य। लेकिन बदलते सामाजिक परिदृश्य में यह धारणा अब कई सवालों के घेरे में है। आज जब पारिवारिक विघटन, तलाक, अलगाव और घरेलू तनाव की घटनाएँ बढ़ रही हैं, तब यह जरूरी हो गया है कि हम ईमानदारी से यह स्वीकार करें—माँ-बाप भी हमेशा सही नहीं होते। आज अनेक परिवारों में टूटन का कारण केवल पति-पत्नी के बीच का मतभेद नहीं है, बल्कि उसके पीछे माता-पिता की भूमिका भी उतनी ही निर्णायक होती जा रही है। यह कहना कठोर लग सकता है, लेकिन सच्चाई यही है कि कई घरों में माता-पिता द्वारा किया गया पक्षपात, हस्तक्षेप और नियंत्रण रिश्तों को भीतर से खोखला कर रहा है।

सबसे पहले बात करते हैं भेदभाव की संस्कृति की। भारतीय परिवारों में यह कोई नई बात नहीं है कि बच्चों के बीच तुलना और पक्षपात होता रहा है। बड़ा बेटा "वारिस" माना जाता है, छोटा "समझौता" करता है, बेटी "पराया धन" होती है और बहू "बाहरी"। यही सोच जब व्यवहार में उतरती है, तो घर में स्थायी तनाव पैदा हो जाता है। माता-पिता अनजाने में या जानबूझकर एक बेटे के पक्ष में खड़े हो जाते हैं, दूसरे को उपेक्षित कर देते हैं। बहू को हर विवाद की जड़ मान लिया जाता है, जबकि बेटी के दोष पर पर्दा डाल दिया जाता है। यह असमानता रिश्तों को धीरे-धीरे तोड़ देती है। विवाह के बाद बहू का स्थान आज भी कई घरों में संदिग्ध बना रहता है। उससे उम्मीद की जाती है कि वह बिना सवाल किए हर परंपरा को स्वीकार करे, हर निर्णय माने और अपनी पहचान को त्याग दे। यदि वह अपने अधिकार, सम्मान या स्वतंत्रता की बात करती है, तो उसे "घर तोड़ने वाली" करार दे दिया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि कई बार घर पहले ही भीतर से टूट चुका होता है—सिर्फ दिखावा बचा होता है।

माता-पिता का अत्यधिक हस्तक्षेप भी आज पारिवारिक विघटन का बड़ा कारण बन रहा है। बेटे-बहू के निजी मामलों में दखल देना, छोटी-छोटी बातों को तूल देना, बहू की शिकायतों को नजरअंदाज करना और बेटे को भावनात्मक दबाव में रखना—ये सब स्थितियाँ विवाह को बोझ बना देती हैं। बेटा अक्सर दो पाटों के बीच फँस जाता है—एक ओर पत्नी, दूसरी ओर माता-पिता। और समाज उसे यही सिखाता है कि माता-पिता का साथ देना ही धर्म है, चाहे इसके लिए दांपत्य जीवन की बलि क्यों न देनी पड़े। यह भी देखने में आता है कि बेटी की शादी के बाद भी माता-पिता उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। बेटी को बार-बार मायके बुलाकर, उसके वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप कर, दामाद के खिलाफ राय बनाकर, वे अनजाने में बेटी का घर कमजोर कर देते हैं। नतीजा यह होता है कि बेटी और दामाद के बीच अविश्वास पनपता है, और अंततः रिश्ता टूटने की कगार पर पहुँच जाता है।

एक और गंभीर पहलू है भावनात्मक ब्लैकमेल। "हमने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया", "हमारे कारण तुम इस मुकाम पर हो", "अगर हमारी बात नहीं मानी तो लोग क्या कहेंगे"—ऐसे वाक्य बच्चों को मानसिक रूप से जकड़ लेते हैं। वे अपनी खुशी, अपने रिश्ते और अपने सपनों की कीमत पर भी माता-पिता को खुश रखने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह दबा हुआ असंतोष किसी न किसी दिन विस्फोट बनकर सामने आता है। समस्या तब और गंभीर हो जाती है जब समाज भी इस मानसिकता को बढ़ावा देता है। हर विवाद में सबसे पहले सवाल बहू से किया जाता है—"क्या किया तुमने?" बेटे को "मजबूर" मान लिया जाता है और माता-पिता को "पीड़ित"। इस सामूहिक पूर्वाग्रह के कारण सच्चाई कभी सामने नहीं आ पाती। जिन घरों में माता-पिता की भूमिका नकारात्मक होती है, वहाँ भी उन्हें प्रश्नों से ऊपर रखा जाता है।

यह कहना भी जरूरी है कि हर माता-पिता दोषी नहीं होते। असंख्य माता-पिता ऐसे हैं जो संतुलित, संवेदनशील और न्यायप्रिय होते हैं। वे बच्चों को स्वतंत्र निर्णय लेने देते हैं, बहू-दामाद को सम्मान देते हैं और संवाद को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन समस्या उन माता-पिता की है जो अपने अनुभव को अंतिम सत्य मान लेते हैं और बदलते समय को स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं। आज का युवा अलग सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में जी रहा है। उसके सामने करियर का दबाव है, आर्थिक असुरक्षा है, बदलते रिश्तों की चुनौतियाँ हैं। ऐसे में उसे सहयोग चाहिए, नियंत्रण नहीं। उसे समझ चाहिए, आदेश नहीं। माता-पिता यदि यह समझने में असफल रहते हैं, तो टकराव स्वाभाविक है। परिवार संस्था को बचाने के लिए सबसे जरूरी है आत्ममंथन। माता-पिता को यह स्वीकार करना होगा कि उम्र के साथ-साथ अधिकार नहीं, जिम्मेदारी बढ़ती है। मार्गदर्शन और हस्तक्षेप में अंतर होता है। बच्चों की शादी का अर्थ यह नहीं कि वे हमेशा माता-पिता की इच्छाओं के अनुसार ही जिएँ। उन्हें अपनी गलतियों से सीखने का अवसर देना भी परवरिश का हिस्सा है।

साथ ही, बच्चों को भी यह समझना होगा कि संवाद ही समाधान है। टकराव, कटुता और अलगाव स्थायी समाधान नहीं हैं। लेकिन संवाद तभी संभव है जब माता-पिता भी सुनने को तैयार हों—बिना जजमेंट, बिना अहंकार।

आज जरूरत है कि हम "माँ-बाप हमेशा सही होते हैं" जैसी भावनात्मक लेकिन अव्यावहारिक धारणाओं से बाहर आएँ। सम्मान और प्रश्न एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। माता-पिता का सम्मान करते हुए भी उनकी भूमिका की समीक्षा की जा सकती है। यही स्वस्थ समाज की पहचान है।

घर टूटने का कारण कभी एक व्यक्ति नहीं होता। यह कई गलत फैसलों, दबे हुए दर्द और अनसुनी आवाज़ों का परिणाम होता है। यदि सच में हम परिवारों को टूटने से बचाना चाहते हैं, तो हमें साहस के साथ यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी आईना माता-पिता को भी दिखाना पड़ता है। यही कड़वा सच आगे चलकर मीठे रिश्तों की नींव बन सकता है।

राष्ट्रीय मुस्कान शक्ति दिवस, 15जनवरी ,मुस्कान की असीम शक्ति , हाय तबस्सुम तेरा

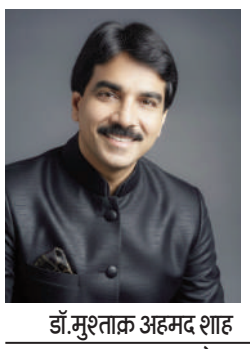

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह

सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

15 जनवरी , यह तारीख़ सिर्फ़ कैलेंडर की एक पंक्ति नहीं, बल्कि मुस्कान की असीम शक्ति का प्रतीक है। राष्ट्रीय मुस्कान शक्ति दिवस हमें याद दिलाता है कि एक साधारण मुस्कान कितनी जादुई हो सकती है। यह न केवल चेहरे को रोशन करती है, बल्कि दिलों को जोड़ती है, दुखों को दूर भगाती है और समाज को सकारात्मक ऊर्जा से भर देती है। आज, जब तनाव और उदासी की दुनिया में हम जी रहे हैं, मुस्कान ही वह हथियार है जो बिना किसी खर्च के लाखों ज़िंदगियों को बदल सकती है।मुस्कान की शक्ति को समझिए। वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध है कि मुस्कुराने से हमारा मस्तिष्क एंडॉर्फिन नामक हार्मोन रिलीज़ करता है, जो दर्द कम करता है और ख़ुशी बढ़ाता है। एक मुस्कान दूसरों को ऊर्जा देती है, सोचिए, अगर आप किसी दुखी व्यक्ति को मुस्कुराकर देखें, तो वह भी अनजाने में मुस्कुरा उठेगा। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहां त्योहारों की रौनक़ हो या सड़क की भागदौड़, मुस्कान ही एकता का पुल है। महात्मा गांधी ने कहा था, ₹मेरा जीवन ही मेरा संदेश है₹ और क्या इससे बेहतर संदेश हो सकता है कि मुस्कान से क्रांति लाई जाए?आज ही संकल्प लीजिए, मुस्कुराइए !परिवार में,सुबह चाय की चुस्की के साथ मुस्कुराहट बांटें, दिनभर का तनाव ग़ायब हो जाएगा।कार्यस्थल पर सहकर्मी से प्रशंसा के साथ मुस्कुराकर बातव कीजिए उत्पादकता दोगुनी हो जाएगी।सड़क पर,अजनबी को अभिवादन में मुस्कान दें, शहर की उदासियत दूर हो जाएगी।सोशल मीडिया पर अपनी मुस्कान की फोटो शेयर करें, मुस्कान की शक्ति के साथ लाखों को प्रेरित करें।याद रखिए, मुस्कान कोई कमज़ोरी नहीं, अपितु सबसे बड़ी ताक़त है। राष्ट्रीय मुस्कान शक्ति दिवस पर वादा कीजिए ,हर दिन कम से कम पांच लोगों को मुस्कुराने का उपहार देंगे। एक मुस्कान से शुरू होने वाली श्रृंखला पूरी दुनिया बदल देगी। मुस्कुराइए, मुस्कराइए और दुनिया को महकाइए। लोग कहें हाय तबस्सुम तेरा,,,

सनातन संस्कृति पर बुना षड्यंत्र : त्योहारों की तिथियों का अपहरण

डॉ0 मत्स्येन्द्र प्रभाकर

स्वतंत्र पत्रकार

पहले दीपावली के पहले 'नरक चतुर्दशी' कोई उत्सव मनाया जाने वाला दिवस न था। घरों की सफाई आदि के बाद दीवाली को घूर पर दिया जलाया जाता था ताकि वह भी नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त हो जाए और तैयार खाद शुद्ध होकर खेतों में पहुँचे। इधर कुछ वर्षो से हिन्दू पर्व, त्योहार निर्धारित तिथि पर न मनाने की परम्परा सी चल पड़ी है। मुमकिन है कि इसके पीछे बाजार, कारोबारी हित तथा रोजगार पैदा करने की प्रत्याशा हो किन्तु यह पारम्परिक सनातन संस्कृति को विकृत करने का षड्यंत्र और कुचक्र अधिक जान पड़ता है। अयोध्या में दीपावली के पूर्व का 'दीपोत्सव' अनजाने या जान-बूझकर उपर्युक्त शंका की एक बड़ी साजिश लगती है। अब 15 जनवरी को मकर संक्रान्ति का अवकाश इसी की अगली कड़ी है। इसी तरह से पिछले दिनों, सालों में अनेक त्योहार बदली तिथियों में मनाये गये हैं। यह भारतीय सनातन संस्कृति और ब्राह्मणों के ज्ञान, विज्ञान एवं अनुसन्धान को खण्डित करने वाली प्रवृत्ति है। इसके पीछे अफसरशाही का एक तबका हो सकता है जो शिक्षा, सोच, समझ तथा संस्कार से न केवल गुलाम है बल्कि विकृत विदेशी संस्कृति का पिट्ठू और पोषक है।

सुनियोजित कुचक्र :

पारम्परिक हिन्दू पञ्चाङ्ग की तिथियों से त्योहारों को खींचकर बाजार की गोद में धकेलने की प्रवृत्ति सनातन धर्म की जड़ों को काटने का सुनियोजित कुचक्र है। नरक चतुर्दशी जो दीपावली से ठीक एक दिन पहले कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मनायी जाती रही, अब पूर्व-दीपोत्सवों के बहाने विकृत हो रही है। यह केवल बाजारवाद नहीं अपितु इसके पीछे अफसरशाही के उस तबके का हाथ है जो विदेशी संस्कृति का दास बनकर स्वधर्म को खण्डित कर रहा है।

पारम्परिक महत्व की उपेक्षा :

'नरक चतुर्दशी' परम्परागत रूप से दीपावली की पूर्व सन्ध्या है जब भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध किया और घरों की सफाई के बाद नकारात्मक ऊर्जा नाश के लिए दीप जलाये जाते थे। अयोध्या में दीपोत्सव को दीपावली से पूर्व (जैसे 2025 में 18-20 अक्टूबर जबकि दीपावली 20-21 को) आयोजित करना शास्त्रीय पञ्चाङ्ग को तोड़ने-मरोड़ने का उदाहरण है। इसी क्रम में मकर संक्रान्ति का अवकाश उत्तर प्रदेश में 14 से 15 जनवरी 2026 को स्थानान्तरित कर दिया गया जो ज्योतिषीय पुण्यकाल से मेल खाता है किन्तु परम्परा से भटकाव दर्शाता है।

बाजार और कारोबार का कुप्रभाव :

हिन्दू त्योहार अब बाजार की रणनीति बन गये हैं, जहाँ ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म दीपावली-नवरात्रि पर ₹12-14 लाख करोड़ का व्यय उत्पन्न करते हैं, 15-30% वृद्धि के साथ।

फेस्टिवल सेल्स, मुहूर्त ट्रेडिंग और रोजगार सृजन के नाम पर तिथियाँ बदली जाती हैं, जैसे होली, दशहरा, राखी जो कभी-कभी दो तिथियों पर विभाजित हो जाते हैं। यह व्यावसायिक हित सनातन पञ्चाङ्ग को विकृत कर रहा है, जहाँ सूर्य सिद्धान्त पर आधारित संक्रान्ति जैसे पर्व ग्रेगोरियन कैलेण्डर से 24 दिन विस्थापित हो चुके हैं।

अफसरशाही का विदेशी दासत्व :

भारतीय नौकरशाही में औपनिवेशिक विरासत प्रबल है जो नियम-प्रक्रियाओं पर अत्यधिक जोर देकर परिणामों की उपेक्षा करती है और पदानुक्रमित 'एलिटिज्म' को बढ़ावा देती है। सरकारी अवकाश सूचियों में हिन्दू तिथियाँ अक्सर पञ्चाङ्ग से विचलित होती हैं, जैसे जन्माष्टमी या रक्षाबन्धन के राज्यवार भेद। उत्तराखण्ड जैसे प्रयास हिन्दू तिथियाँ जोड़ने के होते हैं, किन्तु केन्द्रीय स्तर पर ग्रेगोरियन प्रभुत्व बना है। यह तबका शिक्षा-संस्कार से विमुख होकर पश्चिमी संस्कृति का पोषक बन गया है, जो सनातन ज्ञान-विज्ञान को 'ब्राह्मण परम्परा' सहित खण्डित कर रहा है।

प्रमाणित आँकड़े और ऐतिहासिक भटकाव :

2026 के सरकारी अवकाशों में 17 राष्ट्रीय छुट्टियाँ हैं, किन्तु हिन्दू पर्वों की तिथियाँ बैंक, शेयर बाजार और स्कूलों के अवकाशों में असंगति है। मकर संक्रान्ति सौर घटना होने पर भी 14 जनवरी पर स्थिर रहती है ग्रेगोरियन से, जबकि चन्द्र-सौर पञ्चाङ्ग लचीला है। अयोध्या दीपोत्सव पर राजनीतिक विवाद उभरा, जहाँ आलोचक इसे विभाजनकारी बताते हैं। पिछले वर्षों में नवरात्रि, दुर्गा पूजा जैसी तिथियाँ बाजार व अवकाश नीतियों से प्रभावित हुईं जिससे सांस्कृतिक विकृति बढ़ी।

शास्त्रीय चेतावनी और प्रतिकार :

श्रीमद्भगवद्गीता (3.35) में स्वधर्म की अडिगता पर जोर है: ₹स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।₹ मनुस्मृति और पुराण सूर्य सिद्धान्त पर पञ्चाङ्ग निर्धारित करते हैं, न कि व्यापारिक हितों पर। ब्राह्मणों का ज्ञान-विज्ञान, जो वेद-उपनिषदों से उपजा है, इस कुचक्र से संकट में है। सनातन बन्धुओं को पञ्चाङ्ग पालन, शास्त्रोक्त तिथियों पर अडिग रहना होगा। अफसरशाही के गुलाम तबके को उजागर कर नीतिगत सुधार आवश्यक हैं अन्यथा सनातन संस्कृति का अपहरण पूर्ण हो जाएगा।

पीएम श्री विद्यालय शिक्षक तैनाती: बैकडोर एंट्री की नई नीति (मेरिट के नाम पर चयन या चयन के नाम पर मेरिट की हत्या?)

इतिहास में यह शायद पहली बार है कि किसी चयन परीक्षा का उत्तीर्ण मानदंड और मेरिट, परिणाम देखने के बाद तय किए जाने की स्थिति में रखे गए हों। हरियाणा सरकार की राजकीय मॉडल संस्कृति एवं पीएम श्री विद्यालय शिक्षक तैनाती नीति–2025 को काग़ज़ों में पारदर्शिता और निष्पक्षता का दस्तावेज़ बताया जा रहा है, लेकिन इसके प्रावधानों का गहन अध्ययन कई गंभीर और असहज प्रश्न खड़े करता है।

— डॉ. सत्यवान सौरभ

पीएम श्री विद्यालय शिक्षक तैनाती नीति की सबसे बड़ी और बुनियादी कमी यह है कि स्क्रीनिंग परीक्षा के लिए न्यूनतम उत्तीर्ण अंक निर्धारित ही नहीं किए गए हैं। जब यह स्पष्ट नहीं है कि परीक्षा में पास होने के लिए कितने अंक आवश्यक होंगे, तो चयन को योग्यता आधारित कैसे कहा जा सकता है? यह कोई साधारण तकनीकी त्रुटि नहीं, बल्कि पूरी चयन प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर सीधा आघात है। नीति के अनुसार स्क्रीनिंग परीक्षा को कुल चयन में साठ प्रतिशत वज़न दिया गया है, लेकिन पास–फेल का कोई स्पष्ट मानक न होने के कारण यह परीक्षा पूरी तरह प्रशासनिक विवेक पर निर्भर हो जाती है।

जब विवेक के लिए कोई लिखित, सार्वजनिक और बाध्यकारी मानक नहीं होते, तो चयन प्रक्रिया स्वतः ही संदेह के घेरे में आ जाती है। यहीं से बैकडोर एंट्री की संभावना जन्म लेती है—जिसे चाहें उत्तीर्ण और जिसे चाहें बाहर।

इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि नीति में अनिवार्य मेरिट सूची बनाने का कोई प्रावधान नहीं है। न रैंकिंग का उल्लेख है, न कट-ऑफ अंकों का और न ही यह स्पष्ट किया गया है कि समान अंक होने की स्थिति में प्राथमिकता कैसे तय होगी। इससे पहले जब केंद्रीय स्तर पर आयोजित परीक्षाओं के माध्यम से चयन हुआ था, तब स्पष्ट मेरिट सूची, सार्वजनिक प्राप्तांक और तुलनात्मक मूल्यांकन की व्यवस्था मौजूद थी।

वर्तमान नीति में चयन प्रक्रिया चुनौती योग्य न होकर, केवल औपचारिक वैधता का साधन बनती प्रतीत होती है—मानो निर्णय पहले हो चुके हों और अंक बाद में उन्हें सही ठहराने के लिए जोड़े गए हों। स्क्रीनिंग परीक्षा की पारदर्शिता स्वयं एक बड़ा प्रश्नचिह्न है। यह स्पष्ट नहीं किया गया कि प्रश्नपत्र कौन तैयार करेगा, मूल्यांकन किस संस्था या एजेंसी द्वारा और किस पद्धति से किया जाएगा, तथा अंकों के सामान्यीकरण जैसी कोई व्यवस्था होगी या नहीं। जब चयन का सबसे बड़ा भाग इसी परीक्षा पर आधारित हो और वही सबसे अधिक अस्पष्ट हो, तो यह आशंका स्वाभाविक है कि योग्यता से अधिक पहचान, पहुँच और सिफारिश निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

नीति के पीछे की पृष्ठभूमि पर नज़र डालें तो तस्वीर और स्पष्ट होती है। वास्तविकता यह है कि इन पीएम श्री एवं मॉडल संस्कृति विद्यालयों के लिए अपेक्षित संख्या में आवेदन ही नहीं आए। विभाग स्वयं जानता है कि जिस स्क्रीनिंग परीक्षा का आयोजन किया गया, उसमें सभी अभ्यर्थी निर्धारित स्तर पर उत्तीर्ण नहीं हो पाए। यही कारण रहा कि शुरुआती चरणों में ही इन विद्यालयों में अनेक पद रिक्त रह गए। रिक्त पद विभागीय साख के लिए असहज स्थिति पैदा करते हैं। "मॉडल" विद्यालयों में खाली पद शिक्षा व्यवस्था की सफलता के दावों को कमजोर करते हैं।

इसी दबाव में विभाग ने प्रारंभिक चरणों में चयन प्रक्रिया के मापदंडों में शिथिलता बरती। दूर-दराज़ जिलों में कार्यरत शिक्षकों को उचित मापदंड, साक्षात्कार और मेरिट की कठोरता में ढील देकर इन विद्यालयों में समायोजित किया गया। इस प्रक्रिया से अनेक ऐसे शिक्षकों को, जो वर्षों से दूरस्थ क्षेत्रों में तैनात थे, अपने गृह या समीपवर्ती जिलों में आने का अवसर मिल गया। बाद के चरणों में स्थिति और असंगत हो गई। जो अभ्यर्थी बाद में आए, वे उन मापदंडों से अलग थे जो प्रारंभ में इन विद्यालयों के लिए निर्धारित किए गए थे। चयन प्रक्रिया में यह असमानता स्वयं इस बात का प्रमाण है कि नीति का क्रियान्वयन न तो एकरूप रहा और न ही निष्पक्ष।

इसी पृष्ठभूमि में वर्तमान नीति में न्यूनतम उत्तीर्ण अंक न रखना, परिणाम और मेरिट सूची को सार्वजनिक न करना किसी भूल का परिणाम नहीं लगता। विभाग को यह भय स्पष्ट रूप से है कि यदि कठोर मापदंड, स्पष्ट कट-ऑफ और पारदर्शी मेरिट लागू की गई, तो बड़ी संख्या में सीटें खाली रह जाएँगी। वास्तविकता यह भी है कि अधिकांश शिक्षक इन विद्यालयों में जाना नहीं चाहते—न कार्य परिस्थितियाँ आकर्षक हैं और न ही स्थानांतरण नीति में कोई दीर्घकालिक सुरक्षा। यही कारण है कि पूरी प्रक्रिया को जानबूझकर लचीला, अस्पष्ट और प्रशासनिक विवेक पर आधारित रखा गया है।

यदि सीटें खाली रह जाती हैं, तो बिना मेरिट, बिना तुलनात्मक मूल्यांकन और बिना सार्वजनिक जवाबदेही के किसी को भी—विशेषकर "अपने लोगों" को—इन विद्यालयों में भेजा जा सके। यहीं पर योग्यता आधारित चयन की अवधारणा समाप्त होती है और नियंत्रित चयन की व्यवस्था शुरू होती है। नीति का एक और गंभीर पहलू यह है कि चयन के बाद शिक्षक दस वर्षों तक इन्हीं विद्यालयों में बने रह सकते हैं। यदि चयन प्रक्रिया ही त्रुटिपूर्ण या पक्षपातपूर्ण हुई, तो उस गलती को सुधारने की कोई व्यावहारिक संभावना शेष नहीं रहती। इसका नुकसान केवल योग्य शिक्षकों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि विद्यार्थियों और पूरी शिक्षा व्यवस्था को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

यदि सरकार की मंशा वास्तव में निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण चयन की होती, तो पदों की संख्या के अनुपात में तीन या पाँच गुना अभ्यर्थियों की स्पष्ट मेरिट सूची तैयार की जा सकती थी। यह प्रक्रिया संवैधानिक, न्यायसंगत और कानूनी दृष्टि से कहीं अधिक मजबूत होती, लेकिन नीति में इस विकल्प को जानबूझकर शामिल नहीं किया गया। अक्सर किसी नीति की असली मंशा उसमें लिखी बातों से नहीं, बल्कि उन बातों से समझ में आती है जो उसमें नहीं लिखी होतीं। न्यूनतम उत्तीर्ण अंकों का अभाव, मेरिट सूची की अनिवार्यता न होना और चयन प्रक्रिया को चुनौती देने के स्पष्ट प्रावधानों का न होना—ये सभी संकेत देते हैं कि उद्देश्य योग्यता आधारित चयन नहीं, बल्कि सीटें भरने और चयन को नियंत्रित करने का है।

अंततः यह नीति मेरिट आधारित चयन की अपेक्षा मेरिट के नाम पर बैकडोर एंट्री की अधिक प्रतीत होती है। यदि सरकार वास्तव में शिक्षा की गुणवत्ता और निष्पक्षता को लेकर गंभीर है, तो उसे न्यूनतम उत्तीर्ण अंक स्पष्ट रूप से निर्धारित करने होंगे, मेरिट सूची को अनिवार्य बनाना होगा और पूरी चयन प्रक्रिया को सार्वजनिक निगरानी के दायरे में लाना होगा। अन्यथा यह नीति भविष्य में चयन नहीं, बल्कि चयन के नाम पर मेरिट की हत्या के उदाहरण के रूप में याद की जाएगी।

आदित्य साहु बने झारखंड भाजपा के नये प्रदेश अध्यक्ष, पार्टी चुनाव प्रभारी जुएल उरांव ने की घोषणा

चंपाई, कोड़ा दंपती समेत कुल इक्कीस राष्ट्रीय परिषद हेतु चयनित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , आदित्य साहू को मकर संक्रांति के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी की झारखंड प्रदेश इकाई का नया अध्यक्ष चुना गया है। बुधवार को पार्टी के केंद्रीय चुनाव पदाधिकारी जुएल उरांव, केंद्रीय मंत्री जो सुंदरगढ़ ओडिशा के सांसद भी हैं उन्होंने निर्वाचन की औपचारिक घोषणा झारखंड के अध्यक्ष हेतु की है ।

आदित्य साहू ने मंगलवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में केंद्रीय चुनाव पदाधिकारी जुएल ओराम के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया था। इस पद के लिए किसी अन्य उम्मीदवार का नामांकन नहीं होने के कारण उनका निर्वाचन निर्विरोध हुआ।

निर्वाचन की घोषणा के अवसर पर नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी, राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप वर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा, सांसद बीडी राम सहित भाजपा के कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे। देखा जाय तो आदित्य साहु वैश्य समाज से आते है जिसपर भाजपा की अच्छी पकड़ केंद्र एवं विभिन्न राज्यों में है। इस मौके पर जुएल उरांव ने भाजपा की राष्ट्रीय परिषद के लिए झारखंड से 21 सदस्यों के निर्वाचन की भी घोषणा की। इनमें वयोवृद्ध नेता कड़िया मुंडा, अर्जुन मुंडा, समीर उरांव, यदुनाथ पांडेय, चंपई सोरेन, संजय सेठ, रघुवर दास, दिनेशानंद गोस्वामी, मधु कोड़ा, पशुपति नाथ सिंह, रविन्द्र कुमार राय, अमर कुमार बाउरी, नीलकंठ सिंह मुंडा, भानु प्रताप शाही, जीतू चरण राम, अभयकांत प्रसाद, प्रदीप वर्मा, अनंत ओझा, दीपक प्रकाश, अन्नपूर्णा देवी और गीता कोड़ा शामिल हैं।

आदित्य साहू इससे पहले झारखंड प्रदेश भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रह चुके हैं और वर्तमान में झारखंड से राज्यसभा सांसद हैं। वे दो दशकों से अधिक समय से भाजपा से जुड़े हुए हैं और संगठन में उपाध्यक्ष, महामंत्री सहित कई अहम जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं। आरंभिक दिनों में सांसद रामटहल चौधरी के साथ एक निष्ठावान कार्यकर्ता के रूप में उनकी पहचान होती रही ।61 वर्षीय आदित्य साहू शिक्षा जगत से भी जुड़े रहे हैं । वे वर्ष 2019 तक राम टहल चौधरी कॉलेज में व्याख्याता के रूप में कार्यरत थे। जुलाई 2022 में उन्हें झारखंड से राज्यसभा के लिए निर्वाचित किया गया था।

ब्राह्मण नियोग और बडु नियोग के बीच विवाद के लिए भगवान लिंगराज उपवास मे

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: भगवान लिंगराज उपवास में। भगवान लिंगराज की नीतिकांति बंद है। सेवा में रुकावट के लिए ब्राह्मण और बडु नियोग को दोषी ठहराया गया है। नए कानून के कारण भगवान लिंगराज की नीतिकांति बंद है। मंगलवार को दूध और दूसरी नीतिकांति को लेकर विवाद हुआ था। बाद में नीतिकांति बंद कर दी गई ।ठाकुर की घृत कंबल पॉलिसी लागू नहीं हो पाई। इसलिए ब्राह्मण नियोग संपादक ने कहा कि मकर संक्रांति पर ठाकुर की सभी नियोग कांति पर बैन लगा दिया जाएगा। ब्राह्मण नियोग संपादक ने कहा कि जब तक भगवान लिंगराज के लिए कोई खास कानून नहीं बनता, ऐसी दिक्कत बनी रहेगी। बडु सेवायत 2024 तक घृत कंबल पॉलिसी को फॉलो करते थे। बडु नियोग ने पूछा है कि 2025 में इसमें अचानक बदलाव क्यों किया गया। इस बारे में कोर्ट में केस चल रहा है। अगली सुनवाई फरवरी 2026 में होगी। इस बारे में भक्त कमीशन में शिकायत की गई थी। मंदिर एडमिनिस्ट्रेशन ने इसमें दखल दिया और दूध और दूसरी पॉलिसी को छोड़कर बाकी सभी पॉलिसी लागू की जा सकती थीं। लेकिन कल से अब तक मंदिर एडमिनिस्ट्रेशन ने कोई कदम नहीं उठाया, इसलिए नियोग कांति पर बैन लगा दिया गया है।

भगवान लिंगराज के अनशन पर होने से भक्तों में गुस्सा है। भगवान लिंगराज अनशन पर हैं, सब कुछ अस्त-व्यस्त लग रहा है। भगवान की पूजा भी नहीं हुई है। ठाकुर को देखकर बहुत दुख हो रहा है। ठाकुर खास दिन पर भी सज नहीं पाए हैं। सरकार और प्रशासन को दखल देकर बातचीत से इसे तुरंत सुलझाना चाहिए। श्रद्धालुओं ने कहा कि नियोग विवाद के कारण भगवान लिंगराज को अनशन में रखना ठीक नहीं है। भगवान लिंगराज को ऐसे और कितने दिन अनशन पर रहना पड़ेगा? भक्तों की भावनाओं के साथ यह खेल और कितने दिन खेला जाएगा? नियोग विवाद कब सुलझेगा? यह सवाल खड़ा हो गया है।

हजारीबाग में भीषण विस्फोट ,दो महिला समेत एक पुरूष की दर्दनाक मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राची, झारखंड के हजारीबाग जिले के बड़ा बाजार ओपी अन्तर्गत हबीब नगर में एक भीषण विस्फोट हुआ, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई. मृतकों में दो महिलाएं और एक पुरुष शामिल हैं.

मृतकों के नाम, रशीदा परवीन (पति- मुस्ताक), नन्ही परवीन (पति- सद्दाम) और सद्दाम (पिता- युनूस) है. प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, स्थानीय लोग झाड़ी साफ कर रहे थे, तभी विस्फोट हो गया. आशंका जताई जा रही है कि झाड़ी में पहले से दबा हुआ कोई विस्फोटक पदार्थ या बम रखा गया था, जो सफाई के दौरान फट गया. एक महिला ठंड में धूप सेंकने के लिए चारदीवारी के पास बैठी हुई थी वह विस्फोट की चपेट में आ गई. घटना के बाद मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई और क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया. चार थाना के थाना प्रभारी, दो डीएसपी, स्वान दस्ता और हजारीबाग पुलिस की टेक्निकल टीम घटनास्थल पर पहुंच चुकी है. टीम हर बिंदु पर गहन जांच कर रही है.

आइजी ऑपरेशन माइकल राज ने बताया कि इस घटना में दो महिलाओं और एक पुरुष की मौत हुई है, जिसमें पति-पत्नी भी शामिल हैं. विस्फोट की सटीक वजह और प्रकार की जांच चल रही है. जांच पूरी होने के बाद ही विस्फोटक के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी.

जांच के दौरान अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है कि यह किस प्रकार का बम था. स्थानीय लोगों और पदाधिकारियों ने भी घटना के सटीक कारण पर कोई टिप्पणी नहीं की है. पुलिस मामले की हर पहलू से तहकीकात कर रही है।

पश्चिम बंगाल में निपाह के मरीज की पहचान के बाद ओडिशा में संक्रमण फैलने का डर

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पश्चिम बंगाल में एक संक्रमित व्यक्ति का पता चलने के बाद ओडिशा में निपाह का डर बढ़ गया है। राज्य में अभी तक निपाह वायरस का पता नहीं चला है। हालांकि, हर दिन लोग पश्चिम बंगाल से ओडिशा आ-जा रहे हैं। इसलिए, राज्य में संक्रमण फैलने की संभावना है।पश्चिम बंगाल में संक्रमण को रोकने के लिए एक नेशनल जॉइंट इन्फेक्शन रिस्पॉन्स टीम बनाई गई है।पब्लिक हेल्थ डायरेक्टर डॉ. नीलकांत मिश्रा ने कहा कि ओडिशा में निपाह वायरस पहले कभी नहीं मिला है। अगर केंद्र सरकार कोई गाइडलाइन जारी करती है, तो राज्य सरकार भी गाइडलाइन जारी करेगी। उन्होंने कहा कि अभी इससे घबराने की ज़रूरत नहीं है।

निपाह वायरस जानवरों, इन्फेक्टेड खाने या सीधे इंसानों में फैलता है। इसके इन्फेक्टेड लार, मल, पेशाब और खून से फैलने की सबसे ज़्यादा संभावना होती है। इन्फेक्टेड व्यक्ति को बुखार, सिरदर्द, गले में खराश, दस्त, उल्टी, मांसपेशियों में दर्द और सांस लेने में दिक्कत होती है। गंभीर रूप से इन्फेक्टेड लोगों के कोमा में जाने की संभावना होती है। इसलिए, रेगुलर हाथ धोना और इन्फेक्टेड सूअरों और चमगादड़ों से बचना ज़रूरी है।

ग्लोबल क्लाइमेट चेंज के संदर्भ में, जानवरों से इंसानों में बीमारी फैलने का खतरा बढ़ रहा है। इसलिए, केंद्र और राज्य सरकारों ने मिलकर ऐसी बीमारियों या जूनोटिक बीमारियों से निपटने के लिए एक स्ट्रैटेजी बनाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। 2023 में भुवनेश्वर में कई मीटिंग हुईं। वन हेल्थ प्रोग्राम के ज़रिए जूनोटिक बीमारियों से निपटने के लिए राज्य में 7 सेंटिनल साइट्स पर लैब बनाने का फैसला किया गया है। इसके साथ ही, राज्य और ज़िला लेवल पर एक्शन प्लान तैयार किए जाएंगे और यह मैप किया जाएगा कि कौन सी जूनोटिक बीमारियाँ सबसे ज़्यादा फैली हुई हैं। हालाँकि, हेल्थ डिपार्टमेंट की तरफ़ से इस प्लान पर क्या कदम उठाए गए हैं, इस बारे में कोई साफ़ जानकारी नहीं है।

शापुर नगर स्थित गाजुलारामाराम में मुलेवा परिवार द्वारा आयोजित पतंग उत्सव में भाग लेते दुर्गाराम मुलेवा,लक्ष्मी देवी, रमेश,नरेश,सुरेश,ओमी देवी,प्रेम लता,ममता,रितेश, चेतन, भावना, मीनाक्षी,हर्षित ,जिगीशा,दिव्यांशी, महिमा मुलेवा एवं अन्य।

दाम्माईगुड़ा स्थित रामपल्ली में शर्मा परिवार द्वारा आयोजित पतंग उत्सव में भाग लेते गुमान सिंह, विकास शर्मा, सुनील शर्मा, आनन्द शर्मा, केके बन्ना,बृजपाल, मुकेश दान , विनय, शुभम, गौतम, आदित्य, मनीष सैनी, नवीन, गज्जू सिंह, महावीर सिंह, महिला मंडल माली देवी, मुन्नी देवी, कान्ता, रेखा, ज्योति, ट्विंकल, निकिता एवं अन्य।

पश्चिमी कमान द्वारा विशाल रैली के माध्यम से रक्षा सेवाओं के भूतपूर्वसैनिकों को श्रद्धांजलि

अमृतसर 14 जनवरी (साहिल बेरी)

साहस, बलिदान और राष्ट्र कीआजीवन सेवा को समर्पित एक गंभीर किन्तु उल्लासपूर्ण श्रद्धांजलि स्वरूप, वज्र कोर, पश्चिमी कमान के तत्वावधान में, 14 जनवरी 2026 को खासा, अमृतसर में 10वां रक्षा सेवाएं भूतपूर्व सैनिक दिवस मनाया गया। इस अवसरपर रक्षा बलों के भूतपूर्व सैनिकों, वीरता पुरस्कार विजेताओं, वीर नारियों, विधवाओं एवं उनके परिवारों के अदम्य साहस और निस्वार्थ योगदान कोसम्मानित किया गया।

प्रत्येक वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाने वाला रक्षा सेवाएं भूतपूर्व सैनिकदिवस, भारत के प्रथम भारतीय सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल के. एम. करियप्पाके सेवानिवृत्ति दिवस का स्मरण कराता है तथा सशस्त्र बलों और उनकेविस्तारित परिवार के बीच अटूट संबंध का प्रतीक है।

सेना कमांडर, पश्चिमी कमान की ओर से लेफ्टिनेंट जनरल अजय चांदपुरिया, AVSM, VSM, GOC, वज्र कोर ने राष्ट्र के प्रति भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवारों द्वारा दी गई अतुलनीय सेवा और बलिदान के लिए गहन कृतज्ञता व्यक्त की तथा भारतीय सेना की अपने भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को सम्मान देने, सहयोग करने और

सदैव दृढ़ता से उनके साथ खड़े रहने की स्थायी प्रतिबद्धता को दोहराया, आज भी और सदैव।

मुख्य अतिथि श्री मोहिंदर भगत, माननीय भूतपूर्व सैनिक एवं स्वतंत्रता सेनानी कल्याण तथा बागवानी मंत्री, पंजाब सरकार, ने राष्ट्र निर्माण में भूतपूर्व सैनिकों की उल्लेखनीय भूमिका की प्रशंसा की। उन्होंने हालिया बाढ़ के दौरान पंजाब में उनके योगदान को विशेष रूप से उल्लेखित करते हुए, भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए राज्य सरकार के निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया।

श्रद्धांजलि के साथ-साथ एक व्यापक कल्याण अभियान के रूप में परिकल्पित इस कार्यक्रम के अंतर्गत एक सुदृढ़ एवं संवेदनशील सहायता व्यवस्था सुनिश्चित की गई। 40 से अधिक शिकायत निवारण काउंटरों के माध्यम से SPARSH, पेंशन, ECHS, CSD, पुनर्वास एवं अन्य कल्याणकारी अधिकारों से संबंधित विषयों पर त्वरित सहायता प्रदान की गई, जिससे सेना के विस्तारित परिवार की गरिमा और कल्याण के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता सुदृढ़ हुई।

विशेषज्ञ ओपीडी के माध्यम से व्यापक चिकित्सीय सहायता प्रदान की गई, साथ ही स्वास्थ्य लाभ, कल्याणकारी योजनाओं तथा सेवानिवृत्ति उपरांत रोजगार के अवसरों पर केंद्रित जागरूकता गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं।

इस रैली में लगभग 2,500 भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवारजनों ने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया, जबकि पश्चिमी कमान के अंतर्गत विभिन्न स्थानों से 4,000–4,500 प्रतिभागियों ने वर्चुअल माध्यम से सहभागिता की, जिससे व्यापक एवं समावेशी पहुंच सुनिश्चित हुई।

कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षणों में भूतपूर्व सैनिकों एवं वीर नारियों का सम्मान एवं संवाद, सैन्य परंपराओं को दर्शाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, बहुविशेषज्ञ चिकित्सा जांच, कल्याण एवं शिकायत निवारण स्टॉल तथा सामूहिक भोज शामिल रहे, जिनसे आपसी सौहार्द, स्मरण और सामूहिक गौरव की भावना को बल मिला।

नोडल फॉर्मेशन वज्र कोर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उत्कृष्ट समन्वय, गरिमामय संचालन और राष्ट्र के भूतपूर्व सैनिकों की शाश्वत विरासत को सम्मानपूर्वक नमन सुनिश्चित किया गया, जिनकी सेवा पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी और जिनके बलिदान राष्ट्र की चेतना में सदैव अंकित रहेंगे।

स्मरणीय आयोजनों की इस श्रृंखला की निरंतरता में, 18 जनवरी 2026 को चंडीमंदिर सैन्य स्टेशन में ट्राइसिटी के भूतपूर्व अधिकारी सैनिकों हेतु एक विशेष संवाद एवं भोज का आयोजन किया जाएगा, जो भारतीय सेना और उसके भूतपूर्व सैनिकों के बीच स्थायी बंधन तथा सम्मान, सहभागिता और कल्याण के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता को पुनः सुदृढ़ करेगा।

धन-धन श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व एवं माघी के पावन अवसर पर नगर कीर्तन डेरा बाबा दंदू राम जी के डेरे पहुँचा

अमृतसर, 14 जनवरी (साहिल बेरी)

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धन-धन श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व एवं माघी के पावन अवसर पर अमृतसर के गांव बासरके में श्रद्धा, सम्मान एवं गुरमत मर्यादा के अनुसार विशाल नगर कीर्तन सजाया गया। यह नगर कीर्तन बड़े गुरुद्वारा भाई लालो जी से आरंभ होकर गांव घुमानपुरा, गांव बासरके और गांव पैनी से होते हुए डेरा बाबा दंदू राम जी के डेरे पहुँचा।

नगर कीर्तन के दौरान पंज प्यारों की अगुवाई में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन हजूरी में संगतों ने गुरबाणी कीर्तन, शब्द-कीर्तन और जयकारों के माध्यम से पूरे इलाके को आध्यात्मिक माहौल से सराबोर कर दिया। रास्ते में विभिन्न गांवों की संगतों द्वारा फूलों की वर्षा कर तथा पूरे सत्कार के साथ नगर कीर्तन का स्वागत किया गया।

डेरा बाबा दंदू राम जी के डेरे पहुँचने पर डेरे के महंत श्री बलदेव राज बैरागी जी द्वारा समस्त साधु-संतों सहित पंज प्यारों एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पूर्ण श्रद्धा भाव से स्वागत किया गया। इस अवसर पर आई हुई समस्त संगतों के लिए गुरु का अटूट लंगर भी लगाया गया, जिसमें हर वर्ग के लोगों ने प्रेम और भाईचारे के साथ भाग लिया।

इस पावन नगर कीर्तन ने सिख इतिहास, गुरमत मर्यादा और आपसी भाईचारे का संदेश देते हुए पूरे क्षेत्र में आध्यात्मिक उत्साह और शांति का वातावरण स्थापित किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023